विशद

नन्दीश्वर विधान संस्कृत + हिन्दी

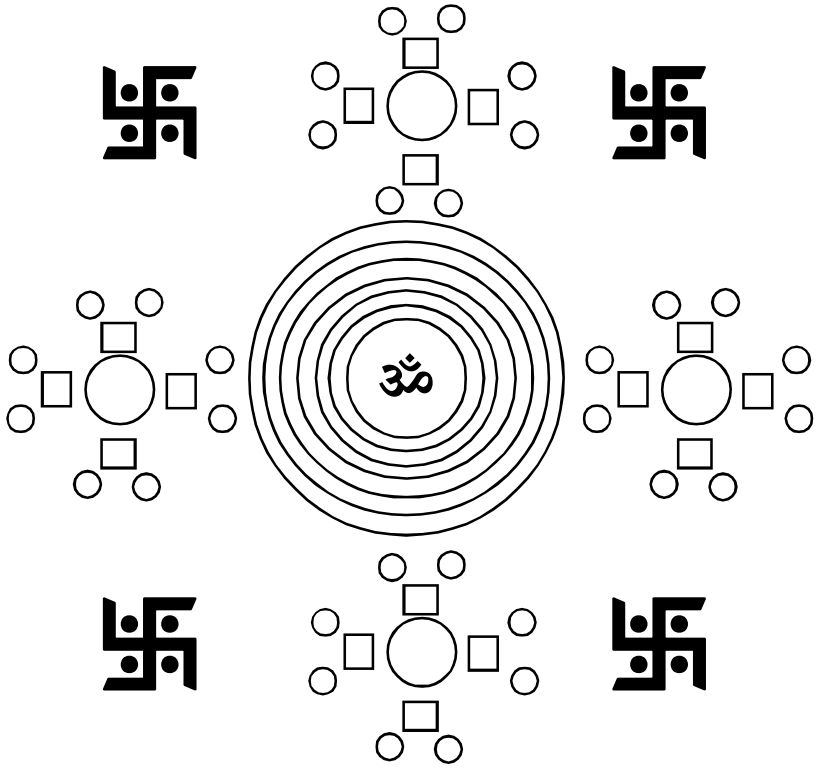

जाप्य मंत्र

(१) ॐ ह्रीं नन्दीश्वर संज्ञाय नमः।(५) ॐ ह्रीं पंचमहालक्षण संज्ञाय नमः।
(२) ॐ ह्रीं महाविभूति संज्ञाय नमः॥(६) ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः।
(३) ॐ ह्रीं त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।(७) ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय संज्ञाय नमः।
(४) ॐ ह्रीं चतुर्मुख संज्ञाय नमः।(८) ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

रचयिता

प.पू. आचार्य श्री १०८ विशदसागरजी

महाराज

कृति - **विशद नन्दीश्वर विधान संस्कृत + हिन्दी**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय-2022 * प्रतियाँ : 1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र0 ज्योति दीदी 9829076085
ब्र0 आस्था दीदी 9660996425
ब्र0 सपना दीदी 9829127533
ब्र0 आरती दीदी 8700876822

लेजर सेटिंग - सुभाष यादव 6388344652

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी,

पी-198, गली नं. 3, शांति नगर, जयपुर मो.9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र-9416888879

C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी-रेवड़ी

3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

4. रोहिणी सेक्टर-3 दिल्ली-9810570747

पुण्यार्जक : राजेन्द्र कुमार जैन, रिटायर्ड बैंक मैनेजर
डॉ0 (श्रीमती) शोभा जैन, प्रिंसिपल पी.जी. कालेज (विदिशा)
एम.आई.जी.-74 (ओम शान्ति निलय) इन्दिरा काम्पलेक्स विदिशा (म.प्र.)
मोबाइल : (942537952 राजेन्द्र), (9893692302 शोभा)

श्री अष्टाह्निका नन्दीश्वर (व्रत कथा)

वन्दो पाँचों गुरु, चौबीसों जिनराज।
अष्टाह्निका व्रत की कहूँ, कथा सबहि सुखकाज।।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र सम्बन्धी आर्यखण्ड में अयोध्या नाम का एक सुन्दर नगर है। वहाँ हरिषेण नाम का चक्रवर्ती राजा अपनी गन्धर्व स्त्री श्री नाम की पट्टरानी सहित न्यायपूर्वक राज्य करता था एक दिन वसंत ऋतु में राजा नगरजनों तथा अपनी ९६००० रानियों सहित वनक्रीड़ा के लिए गया।

वहाँ निरापद स्थान में एक स्फटिक शिला पर अत्यन्त क्षीणशरीरी महातपस्वी परम दिगम्बर अरिंजय और अमितिंजय नाम के चारण मुनियों को ध्यानारूढ़ देखे। सो राजा भक्तिपूर्वक निज वाहन से उतरकर पट्टरानी आदि समस्तजनों सहित श्री मुनियों के निकट बैठ गया और सविनय नमस्कार कर धर्म का स्वरूप सुनने की अभिलाषा प्रकट की। मुनिराज जब ध्यन कर चुके तो धर्मवृद्धि का आशीर्वाद दिया और पश्चात् धर्मोपदेश करने लगे। उन्होंने चक्रवर्ती का चारित्र कहा।

तब श्री गुरु ने कहा, कि इसी अयोध्या नगरी में कुवेरदत्त नामक वैश्य और उसकी सुन्दरी नाम की पत्नी रहती थी, उसके गर्भ से श्रीवर्मा, जयकीर्ति और जयचन्द ये तीन पुत्र हुए।

सो श्रीवर्मा ने एक दिन मुनिराज को वन्दना करके आठ दिन का नन्दीश्वर व्रत किया और उसे बहुत काल तक यथाविधि पालन कर आयु के अन्त में संन्यास मरण किया जिससे प्रथम स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुआ, वहाँ असंख्यात वर्षों तक देवोचित भोगकर आयु पूर्णकर अयोध्या नगरी में न्यायी और सत्यप्रिय राजा चक्रबाहु की रानी विमला देवी के गर्भ से हरिषेण नाम का पुत्र हुआ है और तेरे नन्दीश्वर व्रत के प्रभाव से यह नव निधि चौदह रत्न, छयानवें हजार रानी आदि चक्रवर्ती की विभूति यह छः खण्ड का राज्य प्राप्त हुआ है। और तेरे दोनों भाई जयकीर्ति और जयचन्द्र भी श्री धर्मगुरु के पास से श्रावक के बारह व्रतों सहित उक्त नन्दीश्वर व्रत पालकर आयु के अन्त में समाधिमरण करके स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए थे सो वहाँ से चयकर हस्तिनापुर में विमल नामा वैश्य की साध्वी मती लक्ष्मीमती के गर्भ से अरिंजय

अमितजंय नाम के दोनों पुत्र हुए सो वे दोनों भाई हम ही हैं। हमको पिताजी ने जैन उपाध्याय के पास चारों अनुयोग आदि संपूर्ण शास्त्र पढ़ाये और अध्ययन कर चुकने के अनंतर कुमार काल बीतने पर हम लोगों के ब्याह की तैयारी करने लगे, परन्तु हम लोगों ने ब्याह को बंधन समझकर स्वीकार नहीं किया और बाह्याभ्यंतर परिग्रह त्याग करके भी गुरु के निकट दीक्षा ग्रहण की, सो तप के प्रभाव से यह चारण ऋद्धि प्राप्त हुई है। यह सुनकर राजा बोले–हे प्रभु! मुझे भी कोई व्रत का उपदेश करो, तब श्री गुरु ने कहा कि तुम नंदीश्वर व्रत करके पालो और नंदीश्वर विश्वविधान श्री सिद्धचक्र की पूजा करो। इस व्रत की विधि इस प्रकार है सो सुनों–

इस जम्बूद्वीप के आसपास लवण समुद्रादि असंख्यात समुद्र और धातकीखण्डादि असंख्यात द्वीप एक दूसरे को चूड़ी के आकार घेरे हुए दूने विस्तार को लिये। उन सब द्वीपों में जम्बूद्वीप नाभिवत् सबके मध्य है। सो जम्बूद्वीप को आदि लेकर, जो धातकी खण्ड पुष्करवर, वारुणीवर, क्षीरवर, घृतवर, इक्षुवर और नंदीश्वर द्वीप में प्रत्येक दिशा में एक अंजनगिरि चार दधिमुख और रतिकर इस प्रकार (१३) तेरह पर्वत हैं। चारों दिशाओं के मिलकर सब ५२ पर्वत हुए। इन प्रत्येक पर्वतों पर अनादी निधन (शाश्वत्) अकृत्रिम जिन भवन हैं और प्रत्येक मंदिर में १०८ जिनबिंब अतिशययुक्त विराजमान हैं, ये जिनबिंब ५०० धनुष ऊँचे हैं। वहाँ इन्द्रादि देव जाकर नित्य भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं। परन्तु मनुष्य का गमन नहीं होता इसलिये मनुष्य उन चैत्यालयों की भावना अपने-अपने स्थानीय चैत्यालयों में ही भाते हैं और नंदीश्वर द्वीप का मण्डल मांडकर वर्ष में तीन बार (कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मास के शुक्ल पक्षों में ही अष्टमी से पूनम तक) आठ दिन पूजनाभिषेक करते हैं और आठ दिन व्रत करते हैं। अर्तात् सुदी सप्तमी से धारण करने के लिये नहाकर प्रथम जिनेन्द्र देव का अभिषे पूजा करें, गुरु के पास सप्तमी से धारण करने के लिये नहाकर प्रथम जिनेन्द्र देव का अभिषेक पूजा करें, फिर गुरु के पास अथवा गुरु न मिले तो जिनबिंब के सन्मुख खड़े होकर व्रत का नियम करें।

सप्तमी के एकम् तक ब्रह्मचर्य रक्खें, सप्तमी को एकासन करें, भूमि पर शयन करें, सचित पदार्थों का त्याग करें। अष्टमी को उपवास करें, रात्रि जागरण करें, मंदिर में मण्डल मांडलकर अष्टद्रव्यों से पूजा और अभिषेक करें, पंचमेरु की स्थापना कर पूजा करें, चौबीस तीर्थंकरों की पूजा जयमाला

पढ़ें, नंदीश्वर की व्रत कथा सुनें और **ॐ ह्रीं नदीश्वर संज्ञाय नमः।** इस मन्त्र की १०८ बार जाप करें।

अष्टमी के उपास से १० लाख उपवासों का फल मिलता है नवमी को सब क्रिया अष्टमी के समान ही करना, केवल **ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः।** इस मन्त्र की १०८ जाप करें और दोपहर पश्चात् पारणा करें। इस दिन दश हजार उपवासों का फल होता है।

दशमी के दिन भी सब क्रिया अष्टमी के समाप्त ही करें। **ॐ ह्रीं त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।** इस मन्त्र की १०८ जाप करें और केवल पानी और भात खावें। इस दिन के व्रत का फल साठ लाख उपवास के समान होता है।

ग्यारस के दिन भी सब क्रिया अष्टमी के समान करें, सिद्धचक्र की त्रिकाल पूजा करें और **'ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः'** इस मन्त्र की १०८ बार जाप करे और ऊनोदर (अल्प भोजन) करें। इस दिन के व्रत से ५० लाख उपवास का फल होता है। बारस को भी सब क्रिया ग्यारस के ही समान करें और **ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः** इस मन्त्र की १०८ जाप करें तथा एकाशन करें। इस दिन के व्रत से २४ लाख उपवासों का फल होता है। तेरस के दिन भी सर्व क्रिया बारस के समान करे, केवल ॐ ह्रीं के व्रत से ४० लाख उपवास का फल मिलता है। चौबीस के दिन सब क्रिया ऊपर के समान ही करें और **ॐ ह्रीं सिद्धचक्राय नमः** इस मन्त्र की १०८ जाप करें तथा त्रण (सूखा) साग आदि शुद्धि हो तो उसके साथ अथवा पानी के साथ भात खावें। इस दिन के व्रत का फल एक करोड़ उपवास का फल होता है।

पूनम के दिन सब क्रिया ऊपर के ही समान करे केवल **ॐ ह्रीं इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः** इस मन्त्र की १०८ बार जाप करे तथा चार प्रकार के आहार त्याग करें (अनशन व्रत करें) इस दिन के व्रत का तीन करोड़ पाँच लाख उपवास के जितना फल होता है। पश्चात् एकम के दिन पूजनादि क्रिया के अनन्तर पर आकर चार प्रकार के संघों को चार प्रकार का दान करके आप पारणा करें। जो कोई इस व्रत को तीन वर्ष तक करता है वह उत्तमोत्तम सुख भोगकर सातवें भव मोक्ष जाता हैं तथा जो सात वर्ष एवं आठ वर्ष तक व्रत करता है वह द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की योग्यतापूर्वक उसी भव से मोक्ष जाता है। इस व्रत को अनन्तवीर्य और अपराजित ने किया सो वे दोनों चक्रवर्ती हुए और विजयकुमार इस व्रत के प्रभाव से चक्रवर्ती का सेनापति

हुआ। जरासिंधु ने पूर्वजन्म में यह व्रत किया, जिससे वह प्रतिनारायण हुआ।

जयकुमार सुलोचना ने यह व्रत किया जिससे वह अवधिज्ञान होकर ऋषभनाथ भगवान का ७२वाँ गणधर हुआ और उसी भव से मोक्ष गये। सुलोचना भी आर्यिका के व्रत धारण कर स्त्रीलिंग छेदकर स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुई। श्रीपाल का भी इससे कोढ़ गया और उसी भव से मोक्ष भी हुआ। अधिक कहाँ तक कहा जाय? इस व्रत की महिमा कोटि जीभ से भी नहीं की जा सकती है।

इस प्रकार तीन, पाँच व सात (आठ) वर्ष इस व्रत को करके उद्यापन करें, आवश्यकता हो तो नवीन जिनालय बनावें, सब संघों को तथा विद्यार्थीजनों को मिष्ठान भोजन करावें, चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमा पधरावें, शांति हवन आदि शुभ कार्य करें, प्रतिष्ठा करावें, पाठशाला बनावें, प्राचीन मंदिरों ग्रंथों का जीर्णोद्धार करें और प्रत्येक प्रकार के उपकरण आठ-आठ मंदिर में भेंट करें, इस प्रकार उत्साह से उद्यापन करें यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो व्रत दूना करें इत्यादि।

इस प्रकार राजा हरिषेण ने व्रत की विधि और फल सुनकर मुनिराज को नमस्कार किया और घर जाकर कितने वर्षों तक यथाविधि यह व्रत पालन करके पश्चात् संसार भोगों से विरक्त होकर जिन दीक्षा ले ली, सो तप के प्रभाव व शुक्लध्यान के बल से चार घातिया कर्मों का नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया और अनेक देशों में विहार कर भव्यजीवों को संसार से पार होने वाले सच्चे जिन मार्ग में लगाया। पश्चात् आयु के अन्त में शेष कर्मों को नाश कर सिद्ध पद पाया।

इस प्रकार यदि अन्य भव्यजीव भी इस प्रकार पालन करेंगे तो वे उत्तोमत्तम सुखों को अपने-अपने भावों के अनुसार पाकर उत्तम गतियों को प्राप्त होवेंगे। तात्पर्य यह है व्रत का फल तब ही होता है जबकि मिथ्यात्व तथा क्रोध, मान, माया और लोभ आदि का कषाय तथा मोह को मन्द किया जाय। इसलिए इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

नन्दीश्वर व्रत फल लियो, श्री हरिषेण नरेश।
कर्म नाश शिवपुर गयो, वन्दूं चरण हमेश।।

-संकलन : मुनि विशालसागर

●

यह भी सत्य है

धर्मो गुरुनां मित्रं च, धर्मः स्वामी च बान्धवः।
अनाथ वलः सोऽपि, स त्राता कारणं बिना।।

अर्थात् धर्म गुरु है, मित्र है, स्वामी है, और बन्धु है जो अनाथ जीवों के लिए रक्षाकारी है बिना किसी अपेक्षा के ही वात्सल्य भाव से हितकारी होता है।

संसार में प्रत्येक प्राणी धर्म की सत्ता को मानता है वह उसके सत्स्वरूप को जाने अथवा नहीं जब किसी के जीवन में परेशानी आती है, हर पुरुषार्थ करके भी सफल नहीं होता है तो अनायाश ही कहने लगता है हमारा कर्म का उदय चल रहा है इसका मतलब है धर्म को मानता है किन्तु वर्तमान की स्थिति बड़ी दयनीय हो रही है जहाँ सारे भारत देश में धर्म का प्रभाव था आज धूमिल हो रहा है, प्राचीन काल में प्राकृत भाषा प्रचलित थी, धीरे-धीरे संस्कृत का प्रभाव बढ़ा तो संस्कृत चलने लगी पश्चात देवनागरी हिन्दी भाषा का प्रभाव बढ़ा और अब तो पाश्चात्य सभ्यता के समय में वह भी लुप्त हो रही है अंग्रेजी भाषा अपना मुँह फैलाकर सभी को लील रही है, दूसरी ओर हम दो हमारा एक के जमाने में जहाँ जैन धर्म का लोप सा हो रहा है। लोग एक सन्तान पैदा कर रहे हैं वह भी पढ़ने-लिखने के लिये देश-विदेश में भेज रहे हैं तथा धर्म का ह्रास हो रहा है। जब वर्तमान भाषा में रचित ग्रन्थ को पढ़ने वाले भी लोग नहीं हैं फिर संस्कृत भाषा में कौन पढ़े फिर भी जो कोई भावना रखते हैं उन्हें साहित्य उपलब्ध नहीं है हमारे लिये कोसी में पुस्तक प्राप्त हुई जिसमें संस्कृत चारित्र शुद्धि, नन्दीश्वर, दश लक्षण आदि विधान हैं भाव बना इनका पुनः प्रकाशन हो, इसप्रकार हिन्दी विषय सहित पुनः प्रकाशन कराया जा रहा है जो सभी को धर्म लाभ प्राप्त करने में सहयोगी बनेगी इसी भावना के साथ जिन, गुरुपद में भक्तिशः नमन्। **—आचार्य विशदसागर**

(२४) नंदीश्वर व्रत विधि

इस व्रत में 56 उपवास और 52 पारणाएँ हैं तथा 108 दिन में पूर्ण होता है। इसमें दधिमुख पर्वत संबंधी एक उपवास 1 पारणा के क्रम से 4 उपवास 4 पारणा होने पर अंजनगिरि संबंधी बेला होता है। **यह पूर्वदिक् संबंधी विधि है,** इसी प्रकार से 4 एकांतर पुनः बेला व 8 एकांतर दक्षिण दिक् संबंधी तथैव पश्चिम व उत्तर दिक् संबंधी करने होते हैं। इस तरह 4 बेला, 48 उपवास व 42 पारणाएँ होती हैं। जिन्हें 1 उपवास 1 पारणा के क्रम से व्रत करने की शक्ति नहीं है, वे अपनी शक्ति के अनुसार कभी भी 4 उपवास पुनः बेला पुनः 8 उपवास अर्थात् 1-1 उपवास करके 1 महीने में 4 किये, अनंतर बेला किया, अनंतर 8 किये, ऐसे 48 उपवास व 4 बेला की संख्या को समयानुसार भी पूर्ण करके व्रत कर सकते हैं, ऐसा हरिवंश पुराण में संकेत आया है। इसका फल चक्रवर्ती व तीर्थंकर पद प्राप्त होना है।

समुच्चय जाप मंत्र– ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपसंबंधि अकृत्रिमजिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः। (सुगंधित पुष्पों से 108 जाप्य करना।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

पूर्वदिक् संबंधी जाप्य मंत्र–

1. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थदिक् संबंधियंजनगिरि जनपर्वतस्थित जिनालयस्थसर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः। (बेला में दो दिन यही जाप्य करें)

2. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थ पूर्वदिक्संबंधि प्रथम दधिमुख पर्वतस्थित जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः

3. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थदिक् संबंधिद्वितीय दधिमुख पर्वतस्थित जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

4. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थदिक् संबंधितृतीय दधिमुख पर्वतस्थित जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

5. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थदिक् संबंधिचतुर्थ दधिमुख पर्वतस्थित जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो नमः।

6. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिप्रथमरतिकर पर्वतस्थित जिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

7. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि द्वितीय रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

8. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि तृतीय रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

9. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि चतुर्थ रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

10. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक्संबंधि पंचम रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

11. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिषष्ठ रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

12. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिसप्तम रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

13. ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपस्थपूर्वदिक् संबंधिअष्टम रतिकर पर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

इसी तरह ''पूर्वदिक्'' की जगह दक्षिणदिक् लगाकर 13 जाप्य होंगी, तथैव ''पूर्वदिक्'' के स्थान पर पश्चिमदिक् लगाकर 13, तथैव उत्तरदिक् लगाकर 13, कुल जाप्य 52 ही होंगी। व्रत के दिन नंदीश्वर, पूजन करना चाहिए। इस प्रकार व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन में 52 प्रतिमा सहित नंदीश्वर की प्रतिमा बनवाकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराना चाहिए अथवा शक्ति के अनुसार 52-52 उपकरण, शास्त्र आदि मंदिर में भेंट करके नंदीश्वर उद्यापन विधान का मंडल बनाकर पूजन आदि से धर्मप्रभावना करते हुए उद्यापन करना चाहिए।

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, महिमा अगम अपार।
व्रत विधान करके 'विशद' पाएँ भवदधि पार॥

●

श्री नन्दीश्वर पूजा विधानम्

(अनुष्टुप छन्द)

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं, सर्वज्ञं सर्वपूजितम्।
वीतरागं जगन्नेत्रं, धर्मचक्रप्रवर्तकम्।।१।।
जिनात्यजां सदावन्दे, शारदां मम शारदाम्।
चतु-रसीति लक्षाणां, जन्तूना-मुपकारिणीम्।।२।।
गुरुणां चरणौ नत्वा, प्रणम्याष्टविधार्चनम्।
नन्दीश्वराभिधे द्वीपे, द्वापञ्चाशज्जिनालये।।३।।
आदौगंधकुटी पूजां, पश्चात् सर्वं समाचरेत्।
यंत्रस्य सिद्धचक्रस्य, चतुर्मुख जिनस्य वा।।४।।
एकैकस्य च दिग्भागे, त्रयोदश हि पर्वताः।
तत्र प्रत्येक चैत्यस्य, पूजां कुर्वे शुभाप्तये।।५।।
पूजनीयो जिनाधीशो, नन्दीश्वरस्य स्वस्तिके।
द्वापञ्चाशत्सुपद्मेषु, विमलेषु शिवाप्तये।।६।।
नत्त्वा श्री मज्जिनाधीशं, सर्वज्ञं सुखदायकं।
नन्दीश्वर व्रतं यस्य, पूजा सौख्य प्रदायिनी।।७।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

आनन्दाब्धि विवर्धनैक विधवः संसार विध्वंसकाः।
अज्ञानांध विभेदनेन सदृशास्-त्रैलोक्य लोकार्चिताः।।
कन्दर्पोत्कट कुम्भिदारुणहरि प्राया सुशान्तिप्रदाः।
श्रीमन्तो नन्दीश्वरो जिनवराः कुर्वन्तु मे मंगलं।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे जिनपूजनप्रतिज्ञानाय प्रतिमोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप समुच्चय पूजन

स्थापना

नन्दीश्वराष्टम विशाल मनोज्ञरूपे,
द्वीपेर्- जिनेश्वर गृहांश्च भवन्ति युग्मम्।
पंचाश-दिन्द्र-महितान् प्रयजामि सिद्ध्यै,
देवेन्द्र नागपति चर्चित चारु बिम्बान्।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(सन्निधापनं)

अथाष्टक-(बसन्ततिलका छन्द)

कर्पूर पूर परिपूरित भूरि नीर
धाराभिराभि-रभितः श्रमहारिणीभिः।
नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।।१।।

हृद् घ्राण तर्पणपरैः परितर्प-सर्पैर्-
गन्धैः सुचन्दन-रसैर्-घन कुंकुमाद्यैः।
नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-
मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्व. स्वाहा।।२।।

उन्निद्र चन्द्र विलसत्-किरणावदातैः
सत्कुन्दकोरक निभैः; कलमाक्षतोघैः।
नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-
मानन्दत; प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् नि. स्वाहा।३।।

मन्दार चारु हरिचन्दन पारिजात

सन्तान भूरुह भवैः कुसुमैर्विचित्रैः।

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं नि. स्वाहा।।४।।

सिद्धैर्-विशुद्ध नवकांचन भाजनस्थैः

पीयूष-मिष्ट ललितैश् च रुचिर्-विचित्रैः।।

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दत; प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चरु० नि. स्वाहा।।५।।

ध्वस्तान्धकार निकरैः कनकावदातैर्

दीपैः प्रदीपित समस्त दिगन्तरालैः।

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं नि. स्वाहा।।६।।

धूपैर्-मन्दतर सौरभ जालगुञ्जद्-

भृङ्गाकुलै-रगुर चन्दन चन्द्रमिश्रैः।

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्व. स्वाहा।।७।।

कप्राग्र दाड़िम मनोहर मातुलिङ्ग-

जातीफल प्रभृतिसौरभ सत्फलाद्यैः।

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना-

मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्व. स्वाहा।।८।।

(स्रग्धरा छन्द)

द्वीपनन्दीश्वरेऽस्मिन् विविध मणिगणाक्रान्त कान्ताङ्ग कान्ति··
प्राग्भारन प्रास्तचंद्र द्युतिकर निकर ध्वस्त मिथ्यान्धकारम्।।
चैत्यं चैत्यालयांश्चोज्वल कुसुम फलाद्यैर्निन्द्य प्रभावैः।
भक्त्यायेऽभ्यर्चयन्ति स्फुट-मसुमसुखौ ते लभन्ते विमुक्तिम्।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालये जिनबिम्बेभ्यः अर्ध्यं निर्व. स्वाहा।।अर्घं।।

नन्दीश्वरेऽटमे द्वीपे, जिनालय त्रयोदशे,
पूर्व दिशि संपूजयेत्, पुष्पांजलिं युतं तथा
मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक पूजा (अनुष्टुप छन्द)

अष्टम्यां क्रियते साधो, नन्दीश्वरो हि शोषकः।
दश लक्षोपवासस्य, फलं चाये जिनाधिपं।।१।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये नंदीश्वरोपवासाय दशलक्षोपवास फलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।१।।

नवम्यामेकं भुक्तं हि, महाविभूति नामभाक्।
दश सहस्रोपवासस्य, फलं चाये जिनाधिपं।।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये महाविभूतिनामोपवासाय दशसहस्रोपवा-सफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।२।।

दशम्यां कंजिकाहारस्-त्रिलोकसार संज्ञकः।
षष्ठि लक्षोपवासस्य, फलं चाये जिनाधिपं।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये त्रिलोकसारनाम शोषकाय षष्ठिलक्षोपवा-सफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।३।।

एकादश्यां तिथौ प्रोक्त- मवमौदर्य चतुर्मुखं।
पंच लक्षोपवासस्य, फलं चाये जिनाधिपं।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये चतुर्मुखनामशोषकाय पंचलक्षोपवा-सफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।४।।

द्वादश्या-मनगारस्य, पंच-लक्षण नामकः।

चतु-रशीति-लक्षस्य, फलं चाये जिनाधिपं।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये पंचलक्षणनाम शेषकायपंचाशल्य-लक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाथ जलाद्यर्घं।।५।।

त्रयोदश्यामाऽऽम्लरसः, स्वर्गसोपान संज्ञकः।

चत्त्वारिंशल्लक्षस्य, फलं चाये जिनाधिपं।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये स्वर्गसोपाननाम शोषकाय चत्वारिंशल्लक्षोपवास फलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलाद्यर्घं।।६।।

(बसन्ततिलका छन्द)

श्रीमत्सुसप्तम दिने वरसर्वसंज्ञः

शाकत्रयेण सहितो वरशुद्ध एषः।

लक्षोपवास फलदो भवति प्रसिद्धः

चाये जिनं सकल बोध निधान पात्रम्।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये सर्वसम्पन्नानामोपवासाय लक्षोपवासफल प्रदाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।७।।

(उपजाति छन्द)

एकादिने हीन्द्र ध्वजाभिधान, उपोषको यः क्रियते मनुष्यैः।

तिस्त्रोहिकोट्योत्तर पंचलक्षं, चाये जिनं तस्य फलप्रदाय।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये इन्द्रध्वजनामोपवासाय त्रिकोटिपंच-लक्षोपवास-फलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय अर्घ्यं निर्व०।।८।।

जलगंधाक्षतैः पुष्पैर्-नैवेद्यैदीपधूपकैः।

फलैर्-घान्वितैश्चाये श्रीजिनं सुधये नृणां।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय पूर्णार्घं।।९।।

जयमाला

सती मुक्ती सखी विद्या, यस्योन्मीलित अर्चया।
जिनेन्द्र गेहा विशदं, नन्दीश्वरे संपूजयेत् ।।१।।

(आर्या छन्द)

नंदीश्वरे द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयाः शोभन्ते।
नानासुरत्नमणिमय-कनकमयास्तान् नमामि सिरसासतम्।।२।।
तत्र चतुर्दिक्ष्वापि, चतु-रंजन गिरिषु निरञ्जन कृतयोमांसे।
कर्माञ्जनच्युतसौम्या, नमोस्तु ताभ्यो दुरितज्जन-मासाद्य।।३।।
षोडश दधिमुख गिरिषु, षोडश सदनेषु संति सुरनुत प्रतिमाः।
मणि कनकादियास्ताः, प्रणौमि-मौदाहभवाग्नि शान्त्यै शिरसा।।४।।
रतिकर नग द्वात्रिंशत्-तेषु स्मरहरगृहेषु भान्त्यकृतेषु।
रतिपति विजयिजिनार्चा-रतामेयो अवत्वा नमोस्तु कल्मषहान्यै।।५।।
जिनगेहे जिन प्रतिमा, त्रिलोक, वद्यं त्रिशुद्धतऽप्रणिपत्य।
वन्दे त्रिकरण शुद्ध्या, संहारपरिभ्रमण परिहारार्थम्।।६।।

(अनुष्टुप छन्द)

सिरी नन्दीश्वर द्वीपे, अकृत्रिम जिनालये।
संपूज्येत त्रियोगेन, ऋद्धि सिद्धि शिवप्रदः।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व० स्वाहा।

(तोटक-छन्द)

मुनिपं जिन पादपयोज युगं-सुरनायक नागनरेन्द्र नुतन।
ऊहत नन्दीश्वर जैनगृहं, प्रणमामि मनः शुद्ध्यै सततं।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पूर्वदिक् जिनालय पूजन

स्थापना

जिनान् संस्थाप्यत्र, आह्वानादि विधानतः।
नन्दीश्वर भवान् पुष्पाञ्जलिं प्रतिर्विशुद्धये।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपेपूर्वदिक् जिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

अनुष्टुप छन्द

सलिल धारया शुद्ध्यै, सत्तीर्थोदक वारिभिः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं नि. स्वाहा।

चन्दनैश् कुंकुमै-शुद्ध्यै, शीतलै सुसालिभिः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं नि. स्वाहा।

धवल तन्दुलै पुञ्जै, कलमै-रक्षतैर्युतैः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् नि. स्वाहा।

जाति कुन्दादि राजीव, चम्पकादि कदम्बकैः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं नि. स्वाहा।

सरसैनिष्ठ पक्वानैः, खज्जकैर मोदकादिभिः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं नि. स्वाहा।

घृतेन् प्रज्ज्वलितै दीपैर्-रत्नदीपैर् मनोहरैः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं नि. स्वाहा।

दशांग वस्तु धूपैश्च, सुगंधै संयुतैर्वरैः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं नि. स्वाहा।

दाड़िम आम्र पूगाद्यै, फलैः सुमोक्ष साधकैः।
पूजयेत् प्रतिमा रम्यै, नन्दीश्वर जिनालयम्।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं नि. स्वाहा।

नीरै सुगन्धैः सदकैः, प्रसूनामृत दीपकैः।
धूपैः फलैः सदर्घैश्च, जिनगृहे संपूजयेत्।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अंजन गिरि

(उपजाति छन्द)

प्राच्यां दिशि श्रीगिरि-रंजनंस्यात्, तत्रस्थितं श्री जिन चैत्यवृन्दं।
चाये जलाद्यैः सुरराजवंद्यं, सदा पवित्रं सुखदं सुगात्रं।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशिस्थितांऽजनगिरौ पूर्वदिग्जिनालय अर्चा व्रतोद्योतनाय अर्घ्यं।।१।।

दधिमुख

श्रीमत् प्राचीसुदिग्भागे, गिरि दधि मुखोमतः।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं, चायेऽहं श्रीसुखाप्तये।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित प्रथम दधिमुखगिरि श्री जिनाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय अर्घं।।२।।

(बसन्ततिलका छन्द)

श्रीपूर्वदिग् सुखवराश? सुशोभमानो
नाम्नायुतो दधिमुखो गिरिराज तुल्यः।
तत्रस्थितं सुरनुतं जिननाथ बिम्बं
चाये सदा सकल कर्म विमुक्तरूपं।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितद्वितिय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० जलादिकं।।३।।

श्रीपूर्वस्यां दिशायां च, तृतीयो यो दधिमुखः।
तत्रस्थं जिनचैत्यं च, चाये पाप प्रशान्तये।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थिततृतीय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घ्यं।।४।।

तत्र प्राचीदिशायां च, चतुर्थो यो दधिमुखः।
तत्राश्रितं जिनंचैत्यं, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितचतुर्थ दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घ्यं।।५।।

श्रीमदिन्द्रस्य संबंधि, दिशायां यो रतिकरः।

तत्रस्थं श्री जिनाधीशं, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितप्रथमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घ्यं॥६॥

त्रिदशेन्द्रस्य संबंधि, दिशायां यो रतिकरः।

तत्रस्थं श्री जिनाधीशंपूजयेऽहं सुखप्रदम्।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित द्वितीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घ्यं०॥७॥

श्रीदेवेन्द्रस्य संबंधो, दिग्भागे यो रतिकरः।

तत्रस्थं जिनबिम्बं च, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित तृतीयरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं॥८॥

इन्द्राधिष्ठित दिग्भागे, वर्तते यो रतिकरः।

तत्रस्थं पूज्यपादं च, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित चतुर्थरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०॥९॥

देवदेवस्य दिग्भागे, सुखदेऽस्ति रतिकरः।

तत्रस्थमकलङ्कं च, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित पंचमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं॥१०॥

प्राचीन बहिर्-दिग्भागे, संस्थितो यो रतिकरः।

तत्रस्थंजिनचंद्रं च, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थितो षष्ठरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं॥११॥

इन्द्राणीपति दिग्भागे, संस्थितो यो रतिकरः।

तत्रस्थं जिनबिम्बं च, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थित सप्तमरतिकर गिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०॥१२॥

त्रिदशेन्द्रस्य दिग्भागे, विद्यते यो रतिकरः।

तत्रस्थं जिनसूर्यं च, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिग्स्थिताष्टमरतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं०॥१३॥

तद्बीजं परमं सर्वं, यज्ज्ञानेन सुवासिने।
अनेन मूलमंत्राय, तस्मै पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।१।।

आशीर्वादः

कल्याणं विजयो भद्रं, चिन्तितार्थ मनोरथाः।
श्रीनन्दीश्वर प्रसादेन, सर्वेऽर्था हि भवन्तु ते।।२।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ जयमाला

घत्ता

श्री सुर-णर पणमिय, पयगुणहर भय, सांतिपयासण शांतिजिणा।।
तुव चरण णमिंवर, उवसमईवर, अक्खमि अग्धु समुवयणा।।१।।

छन्द

वाणविंतरवरा, कप्पवासीसुरा, मिलियजोइसियगण अमरासुरगणा।।
सए मनिरंग, रमयन्ति णंदीसरे, अट्ठविय पूय णिम्माविय वसु वासरे।।१।।

गाथा

वसुवासरम्मिपूया, णिम्माविय पढम सग्ग इन्देण।
कणयमय थाल सज्जिय, पज्जलिय रयण आरतिओ।।२।।
पज्जलिय रयण आरतिओ भासुरो।
इंदु णच्चइ सुरा संजुवो सुंदरो।
देव अप्सरगणा जय जय सद्दयं।
कुणइ आरतियो वासओ सुहरयं।।३।।
गाथा–आरतिओ कुण्णंतो, अट्ठम दीवेहिं वासओ भायं।
अच्छरय णच्चमाणा, देवाणां जय जय सहं।।४।।
जय जणाह गुण गहिरमई सायरा।
वीयसो यांति जय लोपतुं भायरा।।
कुणइ आरतिओ विग्ध अवहारिणो।
सग्ग अपवग्ग मग्गम्मि जो देसणो।।५।।

गाथा–अट्ठम दीव पहाणो, चउदिसि चत्तारि वावि सुखणाए।
जोयण लक्ख पमाणा, व्यमेयं पयं पीयाविरे।।६।।
वावि कुंडंमि दह ति णच्चेइहरा।
दिसिहिं दिसि एव जाणेहिं मह्नं सुन्दरा।।
एय एयम्मि वसु अहिए सउ पडिमय।
उद्ध सयपंच धणुहाइ तणु वपुमयं।।७।।
गाथा–अट्ठसहस्सय माला, णाणा रयण-मणीण लंबमाणाए।
पत्तेया-पत्तेया, अणाइ णिहिणामयं सिद्धा।।८।।
जोयण सत्तरि पंच अहियं परं।
उच्चमाणंवि आयाम सहु णिब्भरं।।
विघउरा होति पंणास मनोहारिणो।
चारिदारं वरं मणोहारिणो।।९।।
गाथा–सिंहादार वरम्मिय, धवल मणोहर सोहणाए।।
आविसरा प्रयंडा, चत्तारि माणथंभाए।।१०।।
अट्ठवर पाडिह एसया सोहिया।
वसुविहा दव्वं मंगल सुरे संसया।।
तालकंसाल भरभेरि वीणाकुला।
तवलि झल्लरीय वज्जंति बहु मद्दला।।११।।
गाथा–वज्जंति घायबहुला, इंदो णच्चंतु अप्सरा जुत्तो।।
अषाढकातिकाय, फाल्गुण मासम्मि अट्ठम्मिदिणे।।१२।।
तावकुव्वंति जावंति पुण्णिदिणो।
दिव्यवर सोलसाभरण मंडियतणो।।
दिव्यमणि जडिय आरति ओकर तले।
उत्तरेविय एयं–हि णंदीसरे।।१३।।
धुगिणधों धुगिणधों वज्जंतिए मइलं।
त्रिगि-णेत्रे त्रिणिणेत्रे सहए भुंग्गलं।।

दिव्यमणि जडिय आरतिओ करतले।
उत्तरेवीय एवं–हि णंदीसरे।।१४।।
झिमिगझं झिमिगझं सद्दकंसालया।
णच्चमाणं वि दीसंति बहुपाडया।।
दिव्यमणि जडिय आरतिओ करतले।
उत्तरेवीयं एवं–हि णंदीसरे।।१५।।

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

एवं दिव्वसहा मणिप्पकिरता, इंदेण संजोइया।
उत्तेरेवि जिण्णस्स अट्ठय दिणे, णंदीसरे संकरे।।
पूया भक्तिकरे विझंत्ति विबुहा, पत्ताणिए गण्णए।
जे कुव्वेति सुशुद्ध भावणकरा, सिद्धे पदेण भव्वए।।१६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिगस्थित जिन चैत्यालयेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं नि०॥

नन्दीश्वराष्टमेद्वीपे, जिनगेह शुभाप्तये।
ऋद्धि सिद्धि शिवकारं, विशद भावेन् पूजितं।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ दक्षिण दिक् पूजादिक् प्रारभ्यते

(बसन्ततिलका छन्द)

तीर्थोदकैमणि सुवर्ण घटोपनीतैः, पीठे पवित्रवपुषि प्रविकल्पितार्थैः।
लक्ष्मी सुतागमन वीर्य विदर्भगर्भैः,संस्थापयामि भुवनाधिपतिं जिनेन्द्रम् ।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिग् स्थित-त्रयोदशजिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)। अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (सन्निधीकरणं) अथाष्टकं।

(उपजाति छन्द)

क्षीरोदतोयैः स्नपयन्ति देवाः, याँस्तान जिनेशान् मणि हेम बिम्बान्।
यजामि गङ्गादि भवैर्जलोघैः, नंदीश्वरेऽप्यष्ट दिनानि भक्त्या।।१।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: जलं निर्व० स्वाहा।।१।।

विलेपनैर्-दिव्य सुगन्ध द्रव्यै:, येषां प्रकुर्वन्त्यमराश्च तेषाम्।
कुर्वेऽह-मङ्गे वरचन्दनाद्यै:, नन्दीश्वरेप्यष्टदिनानि भक्त्या।।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: चंदनं निर्व० स्वाहा।।२।।

मुक्तामयै रक्षत पुण्यपुञ्जै:, या प्रार्चिता देव गणैर्जिनार्चा।
तां शालिजातैर्-विमलैर्यजेऽहं नन्दीश्वरेप्-यष्टदिनानि भक्त्या।।३।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: अक्षतान् निर्व० स्वाहा।।३।।

यान्यार्चितान्येवजिनेन्द्रबिम्बान्-येवामरेन्द्रै: सुर वृक्षपुष्पै:।
तान्यचर्ययेऽहं वर चम्पकाद्यै:, नन्दीश्वरेऽप्यष्टदिनानि भक्त्या।।४।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: पुष्पं निर्व० स्वाहा।।४।।

पीयूष जातैश्-चरुभि: सुरेशै:, या: पूजिता सत्प्रतिमा जिनेशां।
तां पूजयेऽहं चरुमोदकाद्यै:, नन्दीश्वरेऽप्यष्टदिनानि भक्त्या।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: चरु० निर्व० स्वाहा।।५।।

महं प्रकुर्वन्ति सुरत्नदीपै:, येषां जिनानां विदधामि तेषाम्।
घृतादिकर्पूरभवै: प्रदीपै:, नन्दीश्वरेऽप्यष्टदिनानि भक्त्या।६।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: दीपं निर्व० स्वाहा।।६।।

स्वर्गोद्भवैश्चारुघटस्थधूपैर्-यानदेवदेवैर्महितान् सुमूर्तीन्।
तान्संयजे दिव्यसुगन्धधूपै:, नन्दीश्वरेप्-यष्टदिनानि भक्त्या।।७।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: धूपं निर्व० स्वाहा।।७।।

फलै: सुकल्पद्रुमजै सुरेशै:, या चर्चिता सत्कृतिभिर्-महेशान्।
तान् नारिकेलादि चयैर्यजेऽहं, नन्दीश्वरेप्-यष्टदिनानि भक्त्या।।८।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्य: फलं निर्व० स्वाहा।।८।।

(बसन्त तिलका छन्द)

विमलजल सुगन्धै-रक्षतैश्चारुपुष्पैः
वरचरुबहुदीपैः सारधूपैः फलैश्च।
जय-जय वरवाद्यैर्-हेमपात्रस्थ मंत्रैः
जिनवरशुभबिम्बा-यार्घमुत्तारयामि।।९।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग् स्थितत्रयोदश जिनालयेभ्यः अर्घं निर्व० स्वाहा।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा (अंजन-गिरि)

दक्षिणस्यां दिशियोऽसा-ऽवंजनीनाम पर्वतः।
तत्रस्थं जिनबिम्बं च, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थितांजनगिरौ श्रीजिनाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।१।।

(चतुः तडिमुख)

श्रीमद्दक्षिणदिग्भागे, नाम्ना दधिमुखो मतः।
तत्रस्थं श्रीजिनं पद्मं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित प्रथम दधिमुख गिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।२।।

दक्षिणस्यां दिशायां च, द्वितीयो यो दधिमुखः।
तत्रस्थं श्रीजिनं पद्मं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित द्वितीय दधिमुख गिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।३।।

यमाश्रित दिशायां च, तृतीयो योदधिमुखः।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित तृतीय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय अर्घं।।४।।

दक्षिणस्यां दिशायां च, चतुर्थो यो दधिमुखः।
तत्रस्थं वीतरागं च, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थ दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय अर्घं।।५।।

(अष्टरतिकर)

दक्षिणस्यां दिशायां च, रतिकरो वै पर्वतः।
तत्रस्थं श्री जिनं पद्मं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित प्रथम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।६।।

श्रीमद्दक्षिण दिग्भागे, रतिकरो द्वितीयकः।
तत्रस्थं जिनचंद्रं च, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित द्वितीय रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।७।।

दक्षिणायां दिशायां च, रतिकरस्-तृतीयकः।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं, चायेऽहं तद्-गुणाप्तये।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित तृतीय रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं।।८।।

तत्र दक्षिणदिग्भागे, तुर्योनाम्ना रतिकरः।
तत्रस्थं श्रीजिनं भक्तया, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित चतुर्थ रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।९।।

देवाश्रितसुदिग्भागे, नाम्ना-रतिकरो मतः।
तत्रस्थं श्रीजिनं भक्तया, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थति पंचम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।१०।।

श्रीमद्दक्षिण दिग्भागे, षष्ठो नाम्ना रतिकरः।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिस्थित षष्ठ रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।१।।

दक्षिणायां दिशायां च, सप्तमो यो रतिकरः।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित सप्तम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।१२।।

तत्र दक्षिण दिग्भागे, अष्टमो हि रतिकरः।
तत्रस्थं श्री जिनाधीशं, चायेऽहं तद्गुणाप्तये।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिग्स्थित अष्टम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय अर्घं०।।१३।।

जिनेन्द्रः शंकरः श्रीदः, परमेष्ठी सनातनः।
अलक्षः सुगतोविष्णु-रुन्नतां वः श्रियं क्रियात्।।१४।।

इत्याशीर्वादः।।

जयमाला

नन्दीश्वर वरदिवहिंए बावन चैत्यालयराय
जिनेश्वरपय कमलो, बहु-पुष्पाञ्जलि देही जि०।

(छन्द)

सुरिंदा जे लहिया अट्टविह पूजकरेयि
सुभत्तिय शुभ जाणिया।।१।।
पंचह मेरु हेममय, असिय जिणंदह धाम,
जिणेसर पयकमलो।।२।।
सत्तरसो विजयारधहिं कुलगिर तीस,
जिणेसर पयकमलो।।३।।
असिय बखारिं जिण भवणिं बीसमहा गयंदत,
जिणेसर पयकमलो।।४।।
माणुस उत्तर चारि जिण दसकुरु जिणगेह,
जिणेसर पयकमलो।।५।।
इस्वाकारि चारि जिणगेह कुण्डलगिर
चत्तारि, जिणेसर पयकमलो।।६।।
रुचकगिर च्यारि पिंडकया,
चउसइ अट्ठावन, जिणेसर पयकमलो।।७।।
व्यंतरमांहि असंख जिण,
जोइससंख विहीण, जिणेसर पयकमलो।।८।।
सग्गि जिणंदह मणि भुवणं,
लक्ख चउरासि होय, जिणेसर पयकमलो।।९।।
लक्ख बहत्तरि सात कोडि,
भुवनालय जिण संख, जिणेसर पयकमलो।।१०।।

अधिक सत्ताणुं सहस्स पुण,

तेवीसा सविजाण, जिणेसर पयकमलो।।११।।

कैलास शत्रुंजय गिर सिहरे,

सत्रुंजय गिरनारि, जिणेसर पयकमलो।।१२।।

गोमट्टसामि आदीकरी,

किट्टिम सब चैत्याल, जिणेसर पयकमलो।।१३।।

अढाईय दीवहं भवियकया,

जिण मंदिरसु बिम्ब-जिणेसर पयकमलो।।१४।।

माणुस खेतहं माहिजिंण,

मुणिवर णिरवाण भूमि ,जिणेसर पयकमलो।।१५।।

नंदीसर पुहुपांजलि,

जोइस भक्ति करेण, जिणेसर पयकमलो।।१६।।

सो णर भुंजवि सग्ग सुह,

मुक्ति हि तिण हवेहिं, जिणेसर पयकमलो।।१७।।

श्री सकल कीरति मुणिवर,

भणइ छोड़ो भवणापास, जिणेसर पयकमलो।।१८।।

यावन्ति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये।

तावन्ति सततं भक्तया त्रि:परीत्य नमाम्यहम् ।।१९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक्स्थित जिनमन्दिरेभ्य: महार्घ०॥१९॥

नन्दीश्वराष्टमेद्वीपे, जिनगेह शुभाप्तये।

ऋद्धि सिद्धि शिवकारं, विशद भावेन् पूजितं।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

●

अथ पश्चिमदिगस्थित चैत्यालय पूजा

स्थापना (अनुष्टुप् छन्द)

द्वापंचाशज्जिनागाराः, प्रतिमा परमप्रभाः।
आह्वानयामि नंदीशं, द्विपंचाष्टक वासरान्।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिग्भागे त्रयोदश जिनालय अत्र अवतर-अवतर। सवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।।

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(बसन्ततिलका छन्द)

सत्सौरभादि वर गन्ध विशुद्ध हस्तैः
कर्पूर धूलि परिमिश्रित तीर्थ तोयैः।
नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्
चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।।१।।

सत्कुंकुमागरु सुवर्त्तिक चंदनानां
गन्धैर्वरैः सुखकरैः कृतिनां सुगन्धैः।
नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्
चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्यः चंदनं निर्व. स्वाहा।।२।।

चंद्रांशु जाल विशदै- रमलैर्-मनोज्ञैः
सद्गन्ध शालि विशदाक्षत पूत पुंजैः।
नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्
चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्यः अक्षतान् निर्व.स्वाहा।।३।।

पंकेज कुन्द बकुलोत्पल मालतीनां
पुष्पैर्-द्विरेफ निनदैः परिपूरिताशैः।
नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्

चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्य: पुष्पं निर्व. स्वाहा।।४।।

सद्धेम भाजन करैरमृतोपमानैः

हव्येन चान्न दधि भक्ष्य सुशर्कराज्यैः।

नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्

चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्य: चरु निर्व. स्वाहा।।५।।

ध्वस्त प्रमोह तिमिरै रसवृद्धराणां

सत्सोम दीप निकरैर्-मणि भाजनस्थैः।

नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्

चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्य: दीपं निर्व. स्वाहा।।६।।

रुजोंगक प्रवर चन्दन चन्द्र गंध

द्रव्योद्भवै-रनुपमैः सुरसेव्य धूपैः।

नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्

चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्य: धूपं निर्व. स्वाहा।।७।।

मोचासुचोच वर पूग रसालकाद्यैः

नारिंग दाडिम विराजित मञ्जु द्रव्यैः।

नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मिन्

चाष्टौ दिनानि विधिना प्रतिमा जिनानाम्।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिग्स्थित जिनालयेभ्य: फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

(स्रग्धरा छन्द)

इत्थं नन्दीश्वराख्ये, वरशिव सुखजे पर्वणीन्द्रादि लोके।

संस्तुत्याष्टौ दिनानि, प्रवरगुणयुतं भव्यलोका यजन्तः।।

ये विद्यानन्दिसूरि प्रणत पद युगं श्री जिनानां सदर्चा।

श्री भूत्वा नागसौख्यं, निरुपम मनघं यांतु मोक्षाय सौख्यं।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम दिक्स्थित जिनालयेभ्य: अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा

श्रीमत्पश्चिम दिक्देशे, बाह्यांजनो गिरिर्-मतः।
तत्रस्थं च गतद्वेषं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थितअंजनगिरौ श्रीजिनाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादिक०।।अर्घं।।१।।

पश्चिमायां दिशायां च, नाम्ना दधिमुखो गिरिः।
तत्रस्थं च गतद्वेषं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित प्रथमदधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।२।।

वरुणाश्रित दिग्भागे, द्वितीयो यो दधिमुखः।
तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित द्वितीय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।३।।

पश्चिमायां दिशायां च, तृतीयो यो दधिमुखः।
तत्रस्थं श्रीजिनाधीशं, चायेऽहं तद्गुणाप्तये।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित तृतीय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।४।।

तत्र पश्चिमदिग्भागे, चतुर्थो यो दधिमुखः।
तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित चतुर्थ दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं।।५।।

दशाननारि दिग्देशे, नाम्ना रतिकरो मतः।
तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित प्रथम रतिकरगिरौश्रीजिनाय० अर्घं०।।६।।

रामारि शत्रु दिग्भागे, द्वितीयो यो रतिकरः।
तत्र स्थितं जगन्नाथं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित द्वितीय रतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।७।।

पश्चिमायां दिशायां च, तृतीयो यो रतिकरः।

तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित तृतीय रतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।८।।

वारुण्यायां दिशायां च चतुर्थो यो रतिकरः।

तत्र स्थितं जिनाधीशं चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित चतुर्थ रतिकरगिरौ श्रीजिनाय०अर्घं०।।९।।

पश्चिमायां दिशायां च, पंचमो यो रतिकरः।

तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित पञ्चम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय०अर्घं०।।१०।।

वरुणाश्रित दिग्भागे, षष्ठो नाम्ना रतिकरः।

तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित षष्ठम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय०अर्घं०।।११।।

सीतारि शत्रु दिग्भागे, सप्तमो हि रतिकरः।

तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थित सप्तम रतिकर गिरौ श्रीजिनाय०अर्घं०।।११।।

श्रीमत् पश्चिम दिग्भागे, अष्टमो हि रतिकरः।

तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक्स्थितअष्टमरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।१३।।

(मालनी छन्द)

सकल कुसुम वल्ली पुष्कलावर्त मेघो
दुरित तिमिर भानुःकल्पवृक्षोपमानः।।
भवजल निधि पोतः सर्व संपत्ति हेतुः।
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वनाथः।।१।।

इत्याशीर्वादः।

अथ जयमाला

कंपिला णयरि मंडस्से, विमलस्से विमल णाणस्से।
आरतिय वर समये, णच्चंति अमर रमणीओ।।१।।
अमर रमणीउ णच्चंति जिणमंदिरं।
विविह वर तूर तालेहिं वग्गि नूपुरं।।
जडिय बहु रयण चामीकरं पत्तियं।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुंदरं।।२।।

(मोतियादाम छन्द)

रुणझुणं कारेण ऊरध चलणुत्तियं।
भेरि गज्जंति बहु तालए बज्जयं।
कमलदल णयण जिणबिम्ब पेखंतिया।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुदरं।।३।।
इंदु धरणेंदु जंखेंदु वो सहतिया।
मिलियसुर असुरघण रास खेलंतिया।।
केचि सिर चमर जिणबिम्ब ढोलंतिया। जि०।।४।।
केसभरि कुसुम भर सिर ढोलंतिया।
वयण छुणि इंदु चमकंति संहतिया।।
कमलदल णयण जिण बिम्ब पेखंतिया।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुदरं।।५।।

गाथा–णंदीसरम्मि दीवे, बावण जिणालयासु पडिमाणं।
अट्ठाइं वरपव्वे, इंदु आरत्तिओ कुणइ।।६।।
इन्दु आरतिओ कुणइ जिण मन्दिरं।
रयण मणि किरण कमलेहिं वर सुन्दरं।।
गीउ गाइयन्ति णच्चन्ति वर णारया।
तूर वज्जन्ति णाणाविंह पाडया।।७।।

गाथा–एक्कम-मिहजिणहरे, चौ चौ सोलह वावीओ।

जोयण लक्ख पमाणं, अट्ठम णंदीसरे दीवे।।८।।
अट्ठमं दीव णंदीसरं भासुरं।
चैत्य चैत्यालयं वन्दि अमरासुरं।।
देव देवी जहाँ धम्म संतोसिया।
पञ्चमं गीय गायन्ति रस पोसिया।।९।।
गाथा–दिव्वे हिं खीरनीर-हिं, गंधे हिं कुसुम मालाइं।
सव्व सुरलोय सहिये, पूजा आरंभये इन्दु।।१०।।
इन्दु सोहम्मि संभाइ वेजोसयं।
आयवो सज्जि ऐरावयं वर गयं।।
सव्वं दव्वेहिं भव्वेहिं पूजा करा।
मिलिय पढमवफया तासु तइ देसिहा।।११।।
गाथा–कंसाल ताल तिविली, झल्लरी भरिह भेरि वीणाउ।
वज्जन्ति भावसहिया, भावेहिं णम्मिया सव्वे।।१२।।
सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं कर ताडया।
सद्दये संसि झिगिणि णीणाडया।
झिगिणिझां झिगिणिझां बज्जये झल्लरी।
णच्चई इन्दु इन्दायणी सुन्दरी।।१३।।
णयण कज्जल सुसीलामयं दीणयं।
हेम हीराल कुण्डल कयं कण्णयं।।
झंझणं झंकरं वज्जए णूपुरं।
जिणंद आरत्तिअं जोइयं सुन्दरं।।१४।।
दिट्ठीणा सव्व अंगुलिय दावंतिया।
खिणिहिं खिणि खिणिहिं जिणबिंब जोवंतिया।
णारि णच्चन्ति गायन्ति कोमल सरं। जिणंद आरत्तिअं
जोइयं सुन्दरं।।१५।।

रुणु झुणुंकारेण उरध करं कंकणं।
णारि जप्पंति जिणणाहवे बहुगुणं।।
जुवइ णच्चन्ति समरंतिणो जिणवरं।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुदरं।।१६।।
कण्ठ कहलेहिं मणिहार झलकंतिया।
जिणह थुणि थुणिहि सवणाइ संतुद्धया।।
विविह कोतुहलं कुणहि णारीणरं।
जिणंद आरत्तियं जोइयं सुदरं।।१७।।

घत्ता–आरति पढेहिं, कम्मह धोवहिं, सग्ग अपवग्ग लहइं।
जं जं मणि झावे, तं सुखपावे, सग्ग मोक्ख हेला तरहि।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिगिस्थितचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व०॥१८॥

इति पश्चिमदिक्स्थतचैत्यालय पूजा॥

नन्दीश्वराष्टमे द्वीपे, जिनगेहे शुभाप्तये।
ऋद्धि सिद्धि शिवकारं, विशद भावेन् पूजितं।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ उत्तरादिक्चैत्यालय पूजा

(स्थापना–बसन्ततिलका छन्द)

आषाढ कार्तिक सुफाल्गुन शुक्ल पक्षे।
चातुर्निकाय सुर वृन्द सुभक्ति पूर्वम्।।
नन्दीश्वराख्य वर पर्वणि संयजेऽस्मि-
नाह्वाननादिभिर्- यजे शुभ वस्तु युक्तैः।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित जिनालय अत्र अवतर अवतर सवौषट् (आह्वाननं) अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः (स्थापनं) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा (सन्निधिकरणं)।

(उपजाति छन्द)

सत्सिन्धु पाथोभि-रमन्द वासैः, सत्स्वर्ण भृङ्गार भृतैर्-जलोघैः।
चाये शतार्धाधिक-काप्तवासा-आषाढ-सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।१।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्योः जलं निर्व०स्वाहा।।१।।

शक्रार्चितान् भव्यसरोज-पूष्णः, कोदण्डसत्-पञ्चशतार्ध मूर्तीन्।
लेपामि सद्गंध विलेपनैस्तान्, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः चंदनं निर्व०स्वाहा।।२।।

नन्दीश्वर द्वीप विशाल वापी, स्थाद्रीन् सुबिम्बान् वरकांचनाभान्।
चर्चेऽक्षतैः कल्पितभावपासान्, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।३।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः अक्षतान् निर्व०स्वाहा।।३।।

कंदर्पसर्वावहताक्ष रूपान्, भव्याटवी वह्नि सिद्धलोकान्।
यजाम्यहं पुष्पव्रजैः जिनेशान्, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।४।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः पुष्पम् निर्व०स्वाहा।।४।।

अत्यक्ष सौख्यास्पद लब्धकामान्, भव्या-मरौघानतकान् गरिष्ठान्।
संपूज्येहं वर भक्षकैस्तान्, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः चरु निर्व०स्वाहा।।५।।

सत्केवलालोकित कृत्स्न लोकान्, घाति क्षयानन्त चतुष्टयाप्तान्।
यायज्मि तान् कर्पूर-रत्नदीपैः, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।६।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः दीपं निर्व०स्वाहा।।६।।

कर्माष्ट काष्ठा लघु पावकाभान्, कैवल्यसौख्यान् परमर्द्धियुक्तान्।
अर्चामि कृष्णागरु धूपधूम्रैः, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।७।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः धूपं निर्व०स्वाहा।।७।।

यजे फलैर्-मुक्त गणा प्रमादान्, प्रबुद्धबोधान् भुवन त्रयाप्तान्।
देवेन्द्र सत्कीर्तित वांच्छि ताप्तान्, आषाढ सत्कार्तिक फाल्गुणेषु।।८।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः फलं निर्व०स्वाहा।।८।।

(बसन्ततिलका छन्द)

वाश्चंदनाक्षत सुपुष्प चरु प्रदीपैः।
धूपैः फलैश्च रचितैः शुभ हेम पात्रैः।।
अर्घ्यं ददामि दमितारिपते? जिनाय।
देवेन्द्रकीर्ति महिताय मनोज्ञकाय।।९।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्स्थित त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः अर्घं निर्व०स्वाहा।।९।।

अर्घ्यावलीम्

अथ प्रत्येक पूजा

उत्तरस्यां दिशायां च, नाम्ना ह्यंजन पर्वतः।
तत्रस्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितां अंजनगिरौ श्रीजिनाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय अर्घं।।१।।

श्री मदुत्तर दिग्देशे, नाम्ना दधिमुखो गिरिः।
तत्रस्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित प्रथम दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय अर्घं।।२।।

उदीच्यां हि दिशायां च, नाम्ना दधिमुखः पृथुः।
तत्रस्थितं अगत्पूज्यं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।३।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित द्वितीय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं।।३।।

उदग् दिशि स्थितस्-तत्र गिरिर्-दधिमुखाधिपः।
तत्रस्थितं जिनाधीशं पूजयेऽहं गुणाप्तये।।४।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थिवत तृतीय दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं।।४।।

उत्तरायां दिशायां च, तुर्यो दधिमुखो गिरिः।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित चतुर्थ दधिमुखगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।५।।

श्री मदुत्तर दिग्भागे, आद्यो रतिकराभिधः।
तत्रस्थितं लोकनाथं, पूजयेऽहं गुणाप्तये।।६।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित प्रथम रतिकरगिरौ श्री जिनाय० अर्घं।।६।।

कुबेराश्रित दिग्भागे, गिरी रतिकराधिपः।
तत्रस्थितं जिनेन्द्रं हि, चर्चेऽहं तद् गुणाप्तये।।७।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित द्वितीय रतिकरगिरौश्रीजिनाय० अर्घं०।।७।।

उत्तरस्यां सुकाष्ठायां, नाम्नां रतिकरो गिरिः।
तत्रस्थितं जगत्पूज्यं, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।८।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थ तृतीय रतिकरगिरौ श्रीजिनाय०अर्घं।।८।।

धनदाश्रित दिग्भागे, तुर्यो रतिकरः खलु।
तत्रस्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।९।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितचतुर्थरतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।९।।

नैगमाश्रित दिग्भागे, पंचमो यो रतिकरः।
तत्र स्थितं जिनाधीशं, चायेऽहं तद् गुणाप्तये।।१०।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थितं पंचम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय०अर्घं०।।१०।।

वित्ताधिपस्य काष्ठायां, षष्ठो रतिकरो गिरिः।
तत्र स्थितं जगत्पूज्यं, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।११।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित षष्टम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।१।।

राजराजस्य ककुभि, सप्तमो यो रतिकरः।
तत्र स्थितं जिनाधीशं, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।१२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित सप्तम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं०।।१२।।

वैश्रवणस्य-दिग्भागे, अष्टमो हि रतिकरः।
तत्र स्थितं जगत्पूज्यं, पूजयेऽहं सुखाप्तये।।१३।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित अष्टम रतिकरगिरौ श्रीजिनाय० अर्घं।।१३।।

जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः, नैवेद्यैर्-दीप धूपकैः।
फलैरर्घ्यं जिनं चाये, दधि दूर्वा कुशैस्तथा।।१४।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक्स्थित त्रयोदश जिनचैत्यालयेभ्यः महार्घ।।पूर्णार्घं

(स्त्रग्धरा छन्द)

यावज्जैनेन्द्रवाणी विलसतिभुवने सर्वसत्वानुकम्पा।
यावज्जैनेन्द्रधर्मं दशगुणसहितं साधवो योजयन्तः।।

यावच्चन्दार्क तारा गगन परिचरा रामकीर्तिश्च यावत्।
तावत्त्वं पौत्रपुत्र स्वजन परिवृतो धर्मवृध्याभिवन्द्यः।।१।।

इत्याशीर्वादः।

जाप्य मन्त्र-

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्यो नमः। १०८ बार

श्री नन्दीश्वर द्वीप जयमाला

(घत्ता छन्द)

नत कल्प महेन्द्रा, नमित मुनीन्द्राश्- चन्द्रार्चित पद कमलवरा।
नुत बुद्धि गणीन्द्रा, दीप्तिजिनेन्द्राश्-तेजयन्त जिनग्रह निकरा।।

क्षीर सिन्धुं समं सुहग वासिय जलं।
कनय मणि घडिय भृंगार-धारोज्वलम्।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।१।।
सुहग कर्पूर सुगंधि चन्दन भरं।
घसिय केसर वरं जन्म पातक हरं।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।२।।
अमल तन्दुल गणं, कमल वासिय हाणं।
नयण मोहन करं, हसिय सज्जन जणं।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।३।।
कमल मचकुन्द जाई जुही चम्पकं।
मालती सुमोगरा तिलक कन्दंबकं।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।४।।

खज्जया मोदया घेवरा फेणया।
सेव सुं हालया लेहु वर गुज्झया।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।५।।
रहय दीपोज्ज्वला कपूर अति उज्ज्वला।
दुरिय तिमिर हरा मति सुद अवंहि फला।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।६।।
सिंघल असित गरु हरिय चंदन भरा।
धूप धूमांचिया गयण मानुष धरा।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।७।।
नारिकैलै फलै पूगि सुनिम्बुकैः।
आम्र जाम्बीर नारिंग दाडीयकैः।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।८।।
कुसुम वर संति सुगंधी सुरभब्यं।
सुर-धरणेन्द्र नाय कुमारं सब्बयं।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।९।।
जय जय सुदेव उच्चरंति जिण मंदिरं।
पूरयंतहि पंचायणं मणुहरं।।
इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।१०।।
कुणइ आरत्तियं इन्दु जिण मंदिरें।
सचल वर संघ आणंद मंगल करे।।

इन्दु आरत्तियं कर विकसिय मणं।
अमर देवि गणा गच्छइ सुभायणं।।११।।

(उपजाति छंद)

अनन्त सौख्यामृत कूप रूपं, जिनेन्द्र गेहं परमं पवित्रं।
नन्दीश्वरे जैन गेहं विशालं, संपूजये यत् विशदं त्रिकालं।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

घण्टा तोरण दाम दर्पण महा श्री चामराणां चयाः।
सद् भृंगारक तार ताल कलश स्फूर्य ध्वजानां गणाः।
येषां ते विलसंति नित्य महषां स्वेतात पत्र त्रयाः।
श्री मन्तो नन्दीश्वरे जिनवराः कुर्वन्तु मे मंगलं।

इत्याशीर्वादः

समुच्चय जयमाला

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

श्रीमन्नेमिजिनं जयत्रयगुरुं, नत्वा सुरैः संविदं।
वक्ष्येऽहं स्तवनं द्वीपाष्टकभवं कोटीशतं सुन्दरं।।
षष्ठिच्यैक सुयोजनस्य सुपय; शीतं शुभं लक्षकं।
चत्त्वारांजन भूधराः प्रगुणका नीलेन्द्ररत्नत्विषः।।१।।

(केसरी छन्दः)

उन्नत चतुराशीति सहस्राः, भाति पटहाकार विमिश्राः।
सहस्र चतुराशीति विष्कंभाः, शशि शून्य त्रय कन्द सुदंभाः।।२।।
हित्त्वा लक्षयोजन गिरिरागं, प्रत्यासंवर वापि सुभाज्यं।
प्रागंजन गिरि प्राच्य सुनन्दा, नन्दावति दक्षिण दिशि द्वन्दा।।३।।
पश्चिम नंदोत्तरशुभनामा, नन्दखेणिका भाति सुरामा।

दक्षिणांजन पर्वत प्राच्या, प्राग्वदराज्या वापि सुरार्च्या।।४।।
दक्षिणतो विरजागत शोका, राजति वापी विगततशोका।
पश्चिम दिश्यंजन परभूघ्रं, त्यक्त्वा योजनशत सहस्त्रं।।५।।
पूर्व विधि वद्विरजा वापी, वैजयंति जयंति सु वापी।
राजत्-यपराजितगुणधामा, उत्तर काशांजनगिरि रामा।।६।।
रमणी नयना सुप्रम विमला, सर्वतोभद्रा सरवर सकला।
सहस्त्र देव योजन अगाधा, लक्षयोजन विश्रित वनसिद्धा।।७।।
दीर्घिका मध्ये देशगिरि साराः, संति षोडश दध्याकाराः।
पटह समं योजन उन्मानं, व्यासादउदया? सुतावन्मानं।।८।।
व्यास द्विकोंणयो रत्याकाराः, द्वात्रिंशत्-सुराज्याकाराः।
संति सहस्त्रोत्सेध विदेहाः, मूलयोजन तुर्यांश सुगेहाः।।९।।
वापीनां परितो वन सारं, भात्यशोकं सप्तच्छदतारं।
चंपक केतकि हंसमरालं, अष्टसुवर्ग प्रमाण विशालं।।१०।।
वनमध्ये चैत्यादिक वृक्षं, दिक्षु भाति सुजिनवर दक्षं।
पल्यंकासन स्थितसुर पूज्यं, शुभं रत्नं प्रभनत सुरराजं।।११।।
अंजन दधिमुख रतिकर सकले, भ्राजंते श्री जिनगृह विपुले।
योजनशत काया महिमाभाः, पंचाशद्वासा मणि शोभाः।।१२।।
पंचसुसप्तति तुंग विशालाः, प्रद्योतित दिङ्मुख परशालाः।
षोडश योजन द्वारोत्सेधं, विसृत वर सुयोजन सिद्धं।।१३।।
तोरण पार्श्व-ररयो भांति, अष्टयोजन कामा सुकांति।
चतुर्विंशति प्रोक्ता परमा, मानस्तंभे अग्रे कामा।।१४।।
भांति गोपुर तोरण त्रिशाला, स्तूप धूप घट ध्वज समराला।

तेमध्ये जिन प्रतिमा तुंगा, चाप पंचशत मूर्ति विभंगा।।१५।।
अष्टागृह शत संख्या गेहं, प्रतिभाति गतकलिमलदेहं।
सिंहासन प्राकीर्णक वरछत्रं, प्रातिहार्य भृंगादिक पात्रं।।१६।।
धवले बाहुल मासित पक्षे, आषाढ़े शुक्लाष्टमि दिवसे।
तत्रागच्छंति सुरनाथाः, साप्सरा वाहनारूढक पंथाः।।१७।।
जिनपूजां रचयंति सुधीराः, अष्टविधार्चन कृत विधिसाराः।
प्राङ् मूर्तेर्जल स्नपनं कृत्वा, किल्विष दूरमनेनेति-मत्वा।।१८।।
याम द्वय प्रत्यास-मनेन, विधिनाखण्डल प्रतिमातेन?
स्तुवंति प्रतिमा विबुधेशाः, गान तानगंधर्व सुरेशाः।।१९।।

अथ प्राकृते

व्यन्तरा जोतिसा सग्गसोहाकुला।
किन्नरा गाय कामिनी संगाकुला।।
धों धों धपमय वज्जये मादृला।
णच्चए इन्दु इंदाणी संगाकुला।।२०।।
तिं तिं तिं तिणि सद्द सोहाकुला।
झिगि झिगि झल्लरि ढोल रसाकुला।।
तें तें ताल कंसाल वीणाकुला।
णच्चए इन्दु इन्दाणी संगाकुला।।२१।।
थें थें जम्पए नारयो तम्बुरो।
रुणुंझुणु झंकरो किंकिणी सुन्दरो।।
जोइ सानन्द सुराव - रसाकुला।
णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्गाकुला।।२२।।

पस्सइ कामिणी वर मणोमोहणी।

हस्सइ हासविलासइ गजगामिणी।

सोहि आहार मन्दार मुक्ताकला।

णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्काकुला।।२३।।

कुणइ अट्ठदिवर्सेहि पूय विहवरं।

जन्ति णियवासयं णिम्मलं भाधरं।

पुण्ण उपावइ सब देव देवी गणा।

णच्चए इन्दु इन्दाणी सङ्काकुला।।२४।।

सुदीप्यभासुरं हि द्वीपनन्दीश्वरम्-

जिनेन्द्रचन्द्रंधरं कलाधरं परम्-परम्।

सुभक्तितोहि पूजये परापरं जिनालयम्

सुधर्मभूषसायरं सुरेन्द्रकीर्तिचर्चितं।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिणे द्वापञ्चाशज्जिनालयेभ्य: जयमाला महार्घं निर्वमामीति स्वाहा।

नन्दीश्वराष्टमे द्वीपे, जिनगेहे शुभाप्तये।

ऋद्धि सिद्धि शिवकारं, 'विशद' भावेन् पूजितं।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

इति नन्दीश्वरपूजा उद्यापन सम्पूर्णम्।।

●

आचार्य श्री विशदसागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री नन्दीश्वर द्वीप समुच्चय पूजन (हिन्दी)

स्थापना

मध्य लोक के मध्य सुमेरू, जम्बू द्वीप में अपरम्पार।
लवण समुद्र घेरता जिसको, दीप से दुगुना गोलाकार।।
अष्टम द्वीप रहा नन्दीश्वर, चारों दिश अंजन गिरि चार।
दधिमुख सोलह बत्तिस रतिकर, गिरि पे जिनगृह अतिशयकार।।
दोहा–आह्वानन जिनगेह जिन, का करते हम आज।
पूजा करते भाव से, तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे द्विपञ्चाशज् जिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(सन्निधापनं)

(मोतियादाम छन्द)

कलश में भरके लाए नीर, नाश हो त्रय रोगों की पीर।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

घिसाए चंदन खुशबूदार, भ्रमण नश जाए मम् संसार।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्व. स्वाहा।

धुवाए अक्षत के यह पुंज, सुपद अक्षय का पाएँ निकुंज।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह चढ़ा रहे हम आज, नाश हो काम रोग साम्राज्य।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बनाए चरु यह शुभ रसदार, क्षुधा रूज हो जाए अब क्षार।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

लिया अग्नी से दीप प्रजाल, मोह का नशे पूर्ण जंजाल।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नि में जला रहे यह धूप, सुपद हम पाएँ विशद अनूप।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: धूपं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते फल ये विविध प्रकार, मोक्ष फल पाएँ हम अविकार।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य यह चढ़ा रहे शुभकार, सुपद शास्वत पाएँ शिवकार।
पूज्य नन्दीश्वर के जिनधाम, भाव से करते विशद प्रणाम।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–शांती धारा दे रहे, यमुना का ले नीर।
भाते है यह भावना, पाएँ भव का तीर।।

शांतये शांति धारा

दोहा–पुष्पाञ्जलि कर पूजते, हैं चौबिस भगवान।
अर्चा कर हमको मिले, शिव पद का सोपान।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

(शम्भू छन्द)

नन्दीश्वर संज्ञकव्रत पावन, करें अष्टमी को (जो जीव) उपवास।
फल पाएँ दशलाख उपासों, का मन में धारें विश्वास।।१।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये नंदीश्वरोपवासाय दशलक्षोपवास फलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।१।।

एक भुक्त नौमी को करके, महा विभूती संज्ञक जाप।
दश सहस्त्र उपवासों का, फल पाते करने वाले आप।।२।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये महाविभूतिनामोपवासाय दशसहस्त्रोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।२।।

दशमी को कांजिक आहारी, त्रिलोक सार संज्ञक शुभकार।
व्रतधारी छह लाख उपासों, का फल पाएँ अपरम्पार।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये त्रिलोकसारनाम शोषकाय षष्ठिलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।३।।

एकदशि को ऊनोदर व्रत, करें चतुर्मुख संज्ञक जाप।
पंच लाख उपासों का फल, पाके कटते उनके पाप।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये चतुर्मुखनामशोषकाय पंचलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।४।।

बारस का व्रत करें जाप शुभ, पंच महा लक्षण है नाम।
लाख चुरासी उपवासों का, फल पावें कहते भगवान।।५।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये पंचलक्षणनाम शेषकायपंचाशल्यलक्षोपवासफलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाथ जलाद्यर्घं।।५।।

लें रस अम्ल त्रयोदशी व्रत में, स्वर्ग सोपान सुसंज्ञक जाप।
चालिस लाख उपावासों का फल, पाके नाशें निज संताप।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये स्वर्गसोपाननाम शोषकाय चत्वारिंशल्लक्षोपवास फलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय जलाद्यर्घं।।६।।

सिद्धचक्र संज्ञक जप करके, होंय सप्तमी को व्रतवान।
लक्षोपवास का फल वे पावें, सकल प्राप्त हो बोधिनिधान।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये सर्वसम्पन्नानामोपवासाय लक्षोपवासफल प्रदाय अष्टाह्निक व्रतोद्योतनाय जलादि अर्घं।।७।।

होय उपोसक पूनम के दिन, इन्द्र ध्वज संज्ञक जाप विशेष।
त्रय कोटी लख पंच उपासों, का फल पावें कहें जिनेश।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये इन्द्रध्वजनामोपवासाय त्रिकोटिपंचलक्षोपवास-फलप्रदाय अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय अर्घ्यं निर्व०।।८।।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु शुभ, दीप धूप फल का ले अर्घ्य।

''विशद'' भाव से करें समर्पित, पावें वे भी सुपद अनर्घ्य।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालये अष्टाह्निकव्रतोद्योतनाय पूर्णार्घं।।९।।

जयमाला

दोहा—नन्दीश्वर शुभ द्वीप है, काल अनादि त्रिकाल।
भाव सहित जिन धाम की, गाते हैं जयमाल।।

चौपाई

एक सौ तिरेसठ लाख चौरासी, लाख योजनों द्वीप विभासी।
अंजन सम अंजनगिरि जानों, चार दिशा में चार हैं मानों।।१।।
इन्द्र नील मणि के कहलाए, सहस चौरासी ऊँचे गाए।
चारों दिशा वापिका गाई, लख योजन जल पूरित भाई।।२।।
दधिमुख वापी मध्य बताए, दश सहस्र योजन के गाए।
बाह्य कोंण वापी के सोहें, रतिकर गिरि जिनमें मन मोहें।।३।।
एक सहस्र ऊँचे जो गाए, आठों अचल समान बताए।
तप्त स्वर्ण सम हैं शुभकारी, जिनगृह गिरियों पे मनहारी।।४।।
पर्व अठाई में सुर जाते, भक्ति भाव से पूज रचाते।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, जन मन की खिल जावें कलियाँ।।५।।
मानव वहाँ नहीं जा पाते, कृत्रिम रचना यहाँ बनाते।
भक्ति भाव से पूज रचाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते।।६।।

दोहा—तीन योग से पूजते, जिनगृह श्री जिनबिम्ब।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ निज प्रतिबिम्ब।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चाशज ्जिनालय जिनबिम्बेभ्यो: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इत्याशीर्वाद:

●

पूर्व दिश जिनालय पूजा

स्थापना

गोलाकार द्वीप नन्दीश्वर, जिसमें पूर्व दिशा शुभकार।
अंजन गिरि है मध्य चतुर्दिश, सजल वापिकाएँ मनहार।।
जिनमें दधिमुख शोभा पावें, जिनके बाह्य कोणों में जान।
रतिकर गिरियों में जिनमंदिर, का हम करते हैं आह्वान।।
दोहा–तेरह जिनगृहपूर्व के, पूज रहे हम आज।
पूजा करते भाव से, पाने शिव साम्राज।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक्जिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनं)

(सखी छन्द)

यह नीर कलश भर लाए, भव बाधा हरने आए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।१।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं स्वाहा।

चन्दन से गंध बनाए, भवताप शान्त हो जाए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।२।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं स्वाहा।

अक्षत यह धोकर लाए, अक्षय पद पाने आए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।३।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् स्वाहा।

अक्षत के पुञ्ज बनाए, यह यहाँ चढ़ाने लाए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।४।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं स्वाहा।

नैवेद्य सरस यह लाए, मम् काम रोग नश जाए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।५।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: नैवेद्यं स्वाहा।

घृत का यह दीप जलाए, तम मोह नशाने आए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।६।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: दीपं स्वाहा।

हम धूप ये खेने लाए, वसु कर्म नाश को आए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।७।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: धूपं स्वाहा।

फल विविध भाँति के लाए, मुक्ती फल पाने आए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।८।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: फलं स्वाहा।

हम अर्घ्य विशद से लाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
हम पूजें जिन प्रतिमाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।९।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा–तेरह जिनगृह पूर्व के, पूज रहे हम आज।
भाते हैं यह भावना, पाएँ शिव का ताज।।

पूर्वदिक्जिनालये पुष्पांजलि क्षिपेत्।

।।चौपाई।। अञ्जन गिरि

अञ्जन गिरि अञ्जन सम जानो, जिसपै चैत्यालय शुभ मानो।
शाश्वत अकृत्रिम जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् अंजनगिरि सिद्धकूट जिनालय जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार पूर्व दधिमुख

अञ्जन गिरि के पूरव जानो, नन्दा वापी है शुभ मानो।

दधिमुख पर चैत्यालय गाए, भाव से पूजा को हम आए।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दावापिकामध्यस्थित दधिमुख पर्वत सिद्धकूट जिनालय-जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण में नन्दावति जानो, वापी में दक्षिण दधिमुख शुभ मानो।

जिसपै चैत्यालय जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दवति वापिकामध्यस्थित दधिमुख पर्वत सिद्धकूट जिनालय जिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी नन्दोत्तरा बतलाई, पश्चिम में सोहे जो भाई।

दधिमुख पै जिनगृह जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दोत्तरवापिकामध्येस्थितिदधिमुख पर्वतसिद्धकुट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दी घोषा वापी जानो, उत्तर दिस में पावन मानो।

दधिमुख पै जिनगृह जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दीघोषावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ रतिकर

नन्दा वापी जो बतलाई, उसकी दिस ईशान कहाई।

रतिकर पर चैत्यालय गाए, भाव से पूजा को हम आए।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दवापिकाईशानकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दावती के शुभ जानो, आग्नेय जिसमें शुभ मानों।

रतिकर पर चैत्यालय गाये, भाव से पूजा को हम आए।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दावापिकाआग्नेयकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दावति वापी जो गाई, उसके आग्नेय में भाई।

रतिकर पर चैत्यालय सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दावतीवापिका आग्नेयकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट

जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दावपि वापी के भाई, रतिकर नैऋत्य में सुखदायी।
जिसपै चैत्यालय जिन सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दवतीवापिकानैऋत्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दोत्तरा वापी के जानो, नैऋत्य में रतिकर पहिचानो।
जिसपै जिनगृह श्री जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिम नन्दोत्तरावतिवापिनैऋत्यकोंणे मध्यस्थित पश्चिम दधिमुख पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दोत्तरा वापी शुभ गाई, पश्चिम में रतिकर है भाई।
जिसपै जिनगृह श्री जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दोत्तरावापिकावायव्यकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दी घोष वापी जानो, वायव्य कोण में रतिकर मानो।
जिसपै चैत्यालय जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् नन्दीघोषावापिवायव्यकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी नन्दी घोषा गाई, दिश ईशान में रतिकर भाई।
जिसपै जिनगृह श्री जिन गाए, भाव से पूजा को हम आए।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे नन्दीघोषावापिकाईशानकोंणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदश है श्री जिनके धाम, शोभते हैं अतिशय अभिराम।
विशद जिनबिम्ब रहे सिवधाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिक् जिनालय जिनबिम्बेभ्यो: अर्घ निव. स्वाहा।

जयमाला

दोहा—जिन प्रतिमा तीर्थेश की, दर्शायक शिव पंथ।
अत: पूजते देवगण, सुर नर मुनि सब संत।।

(छन्द लावनी)

हे तीर्थंकर! लख शांत स्वरूप तुम्हारा।
चित् शांत हुआ है, करके दर्श हमारा।।टेक।।

है द्वीप आठवां नन्दीश्वर मनहारी, हैं पावन जिन गृह जिसमें मंगलकारी।
अद्भुत महिमा है जिनकी विस्मयकारी, जिनबिम्ब शोभते जिनमें अतिशयकारी।।
अनुपम प्रभुता महात्म्य है जग से न्यारा...।।चित्...१।।

कार्तिक फाल्गुन माह अषाढ़ में जानों, हों पर्व अठाई तीनों माह में मानों।
तव देव इन्द्र परिवार सहित सब जावें, जो पूजा भक्ती करके पुण्य कमावें।।
न भक्ती बिन है देवों को कोई चारा...।।चित्...२।।

है द्वीप के पूरव में अंजन गिरि भाई, जो अंजन जैसी श्याम रंग की गाई।
जिसके चारों दिश चार वापियाँ जानो, दधिमुखशुभ जिनके मध्य धवल हैं मानों।।
है ढोल पोल सम गिरियों का आकारा...।।चित्...३।।

दो कोंण वापियों के जो बाह्य कहएँ, रतिकर गिरियाँ रतिसम शोभा कोपाएँ।
ये तेरह जिनगृह पूरब दिश में गाए, जिनकी अर्चाकर प्राणी हर्ष मनाए।।
बोलें प्रत्यक्ष परोक्ष सभी जयकारा...।।चित्...४।।

गुणगान करें हम जिनबिम्बों का कैसे, हैं ज्ञानमूर्ति अरहंत प्रभू के जैसे।
हम जिनदर्शन कर निज आतम को ध्याएँ, परभाव शून्य शिवरूप परम पद पाएँ।।
हम पाएँ भव-भव में प्रभु आप सहारा...।।चित्...५।।

(घत्ता छन्द)

प्रभु के गुण गाएँ, भाव से ध्यायें, निज स्वभाव में लीन भये।
रागादि विनशे, ज्ञान प्रकाशे, कर्म महारिपु आप क्षये।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चासत जिनालय जिनबिम्बेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, महिमा अपरम्पार।
पूज रहे हम भाव से, जिनगृह बारम्बार।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

दक्षिण दिश जिनालय पूजन

गोलाकार द्वीप नन्दीश्वर, जिसमें दक्षिण दिश शुभकार।
अंजन गिरि है मध्य-चतुर्दिश, सजल वापिकाएँ मनहार।।
जिनमें दधिमुख शोभा पावें, जिनके बाह्य कोणों में जान।
रतिकर गिरियों में जिनमंदिर, का हम करते हैं आह्वान।।

दोहा–तेरह जिनगृहपूर्व के, पूज रहे हम आज।
पूजा करते भाव से, पाने शिव साम्राज।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणजिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणजिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणजिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनं)

(चाल छन्द)

कूप का नीर यह लाए, रोग त्रय नाश हो जाए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।१।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं स्वाहा।

गंध सुरभित बना लाए, भवातप नाश को आए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।२।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं स्वाहा।

सुअक्षत श्वेत यह लाए, सुपद अक्षय जो मिल जाए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।३।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् स्वाहा।

पुष्प पूजा को यह लाए, क्षुधा रुज शांत हो जाए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।४।।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं स्वाहा।

सुघृत का दीप प्रजलाए, मोह तम पूर्ण नश जाए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: नैवेद्यं स्वाहा।

धूप अग्नी में प्रजलाए, कर्म से मुक्ति मिल जाए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: धूपं स्वाहा।

सुफल पूजाको यह लाए, मोक्ष फल प्राप्त हो जाए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: फलं स्वाहा।

विशद हम अर्घ्य यह लाए, सुपद शाश्वत को हम आए।
श्री जिनधाम शुभकारी, पूजते श्रेष्ठ मनहारी।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा–दक्षिण के जिनगृह यहाँ, पूज रहे हम आज।
भाते हैं यह भावना, पाएँ शिव का ताज।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक्स्थित जिनमन्दिरेभ्य: पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अंजनगिरि-मोतिया दाम

द्वीप नन्दीश्वर दक्षिण जान, श्रेष्ठ अञ्जन गिरि रही महान।
रहा जिसपै श्री जिन का धाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार दधिमुख

श्रेष्ठ अञ्जन गिरि के पहचान, पूर्व में अरजा वापी मान।
रहा दधिमुख पै श्री जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ आञ्जन गिरि के शुभ जान, वापी विरजा दक्षिण में मान।
रहा दधिमुख पै श्री जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशि विरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट

जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगिरि अञ्जन के पश्चिम जान, अशोका वापी रही प्रधान।
रहे दधिमुख पै श्री जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी अरजा के शुभ ईशान, कोंण में रतिकर रहा महान।
रहा जिसके ऊपर जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वत सिद्धकूटजिनालययजिनबिंबेभ्ये: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट रतिकर

अचल अंजन के उत्तर जान, वीत शोका शुभ मान।
रहे दधिमुख पै श्रीजिनधाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि, अरजावापिकाईशानकोंणेरतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालयजनिबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि अरजा के आग्नेय जान, रहा रहितकर गिरि महिमावान।
रहा जिसके ऊपर जिनका धाम, श्रीजिनवर के चरण प्रणाम।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापीका आग्नेयकोंणेरतिकर पर्वत्तसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि विरजा के दिश आग्नेय, कोंण में रतिकर गिरि है ध्येय।
रहा जिसके ऊपर जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापीका आग्नेयकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि विरजा के नैऋत्य जान, कोंण में रतिकर रहा महान।
श्रेष्ठ जिसके ऊपर जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणादिशि विरजावापीकानैऋत्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशोका वापी के नैऋत्य, कोंण में रतिकर के आश्रित्य।
रहे अकृत्रिम श्री जिनधाम, श्री जिनवर के चरण प्रणाम।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापीकानैऋत्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धिकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशोका वापी के वायव्य, कोंण में रतिकर है अतिभव्य।
रहे जिसपै जिनगृह भगवान, चरण में जिनके विशद प्रणाम।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापीकावायव्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतशोका वापी है भव्य, कोण जिसका जानो वायव्य।
रहे रतिकर पै श्री जिनधाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापीकावायव्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतशोका वापी शुभ जान, कोंण जिसका है शुभ ईशान।
रहे रतिकर पै श्री जिनधाम, चरण में जिनके विशद प्रणाम।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोकावापीईशानकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

तेरह जिनग्रहपूर्व के जानो, अकृत्रिम शाश्वत जो मानो।
जिसपे जिनग्रह श्रीजिनग्रह गायें, भाव से पूजा को हम आये।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे दक्षिणदिश जिनालय जिनबिम्बेभ्यो: अर्घ निव. स्वाहा।

जयमाला

दोहा–अकृत्रिम जिनबिम्ब शुभ, वीतरागता वान।
जयमाला गाते विशद, करते हैं यशगान।।

(नरेन्द्र छन्द)

नित्य निरंजन परम ज्ञानमय, कल्पतरु रत्नाकर।
आप अलौकिक वीतराग मय, चित् चैतन्य सुधाकर।।
मंगलमय मंगल कारक हैं, विशद ज्ञान के दाता!
त्रिभुवन पति सुरनर से पूजित, जग जीवों के त्राता।।१।।

जो तुम वचन सुधारस पावें, उनके दुख नश जावें।
जो तुम चरण कमल कों पूजें, जग में पूजा पावें।।
जो तुम आज्ञा पालें उनकी, कोई न आज्ञा टालें।
चित्त में ध्यावें भक्ति भाव से, जग जन उनको ध्यावें।।२।।
मध्य लोक के मध्य द्वीप में, जम्बूदीप कहावे।
उसके आगे द्वीप आठवां, नन्दीश्वर कहलावे।।
जिसके दक्षिण भाग में तेरह, जिनगृह शाश्वत गाये।
अंजन गिरि दधिमुख रतिकर शुभ पावन संज्ञा पाये।।३।।
मन से भक्ति करें जो भविजन, मन निर्मल हो जावें।
वचनों से संस्तव जो पढ़ते, वचन सिद्धि वे पावें।।
तन से जो प्रणमन करते हैं, तन के रोग नशावें।
तीन योग से वन्दन करके, कर्मों से बच जावें।।४।।
दोहा–जिनगृह में जिनचैत्य हैं, मंगलमयी महान।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं यशगान।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपञ्चातजिनालय जिनबिम्बेभ्योः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, महिमा अपरम्पार।
पूज रहे हम भाव से, जिनगृह बारम्बार।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पश्चिम दिश जिनालय पूजन

स्थापना

गोलाकार द्वीप नन्दीश्वर, जिसकी पश्चिम दिश शुभकार।
अंजनगिरि है मध्य चतुर्दिश, सजल वापिकाएँ मनहार।।
जिन में दधिमुख शोभा पावें, जिनके बाह्य कोणों में जान।
रतिकर गरियों में जिनमंदिर, का हम करते हैं आह्वान।।

दोहा–तेरह जिनगृहपूर्व के, पूज रहे हम आज।
पूजा करते भाव से, पाने शिव साम्राज।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमजिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमजिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमजिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनं)

पूजन (चौपाई)

यमुना का शुभ नीर चढ़ाएँ, रोग जरादिक पूर्ण नशाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं स्वाहा।

चन्दन केसर सहित चढ़ाएँ, भवाताप से मुक्ती पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं स्वाहा।

साबुत अक्षत धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग अपना विनशाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं स्वाहा।

सरस शुद्ध नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं स्वाहा।

घृत के पावन दीप जलाएँ, आरति करके मोह नशाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।

नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: धूपं स्वाहा।

फल ताजे हम यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महा पदवी हम पाएँ।

नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: फलं स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव जाएँ।

नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, विशद भाव से पूज रचाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापञ्चाथजिनालय जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं स्वाहा।

अर्घ्यावली

अञ्जन गिरि (पद्धड़ि छन्द)

जय नन्दीश्वर जानो महान, जिसकी पश्चिम दिश में प्रधान।

अञ्जन गिरि पै जिनगेह जान, जिसके जिनपद में है प्रणाम।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार दधिमुख

शुभ अञ्जन गिरि के पूर्व जान, विजया वापी सोहे महान।

जिसमें दधिमुख की अलग शान, जिसपै जिनगृह जिन पद प्रणाम।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीकामध्यधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अञ्जन गिरि के दक्षिण महान, वापी वैजयन्ती शोभमान।

जिसमें दधिमुख पर जैन धाम, जिनपद में है मेरा प्रणाम।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैयजन्तीवापीकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अञ्जन गिरि के पश्चिमी जान, शुभ वापि जयन्ती रही मान।

दधिमुख में सोहे जैन धाम, जिनके जिनपद में है प्रणाम।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयन्तीवापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि अंजन के उत्तर प्रधान, अपराजित वापी है महान।

जिसके दधिमुख पै जैन धाम, निजपद में है मेरा प्रणाम।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट रतिकर

विजया वापी दिश में ईशान, रतिकर गिरि जिसमें है प्रधान।

जिसपै जिनगृह है शोभमान, जिनपद में मेरा शत प्रणाम।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीईशानकोंणेरतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयवापि आग्नेय जान, रतिकर द्वितिय सोहे महान।

जिसपै सोहे श्री जैन धाम, जिनपद में है मेरा प्रणाम।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापीआग्नेयकोंणेरतिकरपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वापी वैजयन्ती है विशेष, आग्नेय में रतिकर पै जिनेश।

वेदी में होते शोभमान, जिसके जिनपद में है प्रणाम।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीआग्नेयकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धखूटजिालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी वैजयन्ती है प्रधान, नैऋत्य में रतिकर है महान।

जिसपै सोहे श्री जैनधाम, जिनपद में है मेरा प्रणाम।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंतीवापीनैऋत्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धखूटजिालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी जयन्ती के वायव्य, शुभ कोंण में रतिकर रहा भव्य।

जिसपै सोहे, श्री जैनधाम जिनपद में है मेरा प्रणाम।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापीनैऋत्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी जयन्ती का प्रधान, नैऋत्य कोंण अति शोभमान।

रतिकर पै सोहें जैन धाम, जिनपद में है मेरा प्रणाम।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि जयंतीवापीवायव्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित वापी के वायव्य, दिश में रतिकर गिरि रहा भव्य।
जिसपै सोहे, श्री जिनधाम, जिनपद में है मेरा प्रणाम।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितवापीवायव्यकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित वापी के ईशान, दिश में रतिकर है शोभमान।
जिसपै सोहे, जिनवरधाम, जिनपद में है मेरा प्रणाम।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि अपराजितवापीईशानकोंणेरतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर के तेरह जिनगृह, पूज रहे हम धार सनेह।
जिसपै सोहें, श्रीजनधाम, जिनपद मेरा 'विशद' प्रणाम।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—शाश्वत श्री जिनबिम्ब हैं, अतिशय महिमावान।
भाव सहित जिनका विशद, करते हैं गुणगान।।

(जोगीराशा-छन्द)

वीतराग अविकारी जिनवर, निज स्वरूप प्रगटाते।
धन्य बिम्ब उपकारी जिनके, निज स्वरूप दिखलाते।।टेक।।
भटक रहे हम चाह दाह में, सुख का लेश ना पाए।
मंद कषायी होकर अंतिम, ग्रीवक तक हो आए।
निज की सुधि जागी हे प्रभुवर!, पास आपके आये।।१।।
वीतराग अविकारी...
सिद्ध शुद्ध स्वभाव हमारा, यह रहस्य प्रगटाया।
किन्तु मोहवश भ्रमित हुए जग, निज को जान न पाया।

जिन दर्शन से निजका दर्शन, पाने को हम आए।।२।।
वीतराग अविकारी...
रत्नत्रय आभूषण सांचा, प्रभु ने यही बताया।
विशद धर्म सुख शांति प्रदायक, पाओं उसकी छाया।
भव्य निहारें उसे जीव जो, निज को स्वयं निहारे।।३।।
वीतराग अविकारी...
आप नहीं देते कुछ भी पर, भक्त आपसे लेते।
दर्शन कर उपदेश श्रवण कर, अमृत घट भर लेते।
परम ज्योति उद्योतित करके, भव्य जीव कई तारे।।४।।
वीतराग अविकारी...
है आश्चर्य जनक प्रभु महिमा, जग जन की हितकारी।
उभय लोक सुख विशद प्राप्त हो, पूजा कर मनहारी।
सुनकर महिमा प्रभू आपकी, आए आपके द्वारे।।५।।
वीतराग अविकारी...

दोहा–परम पूज्य परमात्मा, तीन लोक के ईश।
शिव पद पाने के लिए, झुका रहे पद शीश।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशतजिनालय जिनबिम्बेभ्यो: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, महिमा अपरम्पार।
पूज रहे हम भाव से, जिनगृह बारम्बार।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उत्तर दिशा पूजन

स्थापना

गोलाकार द्वीप नन्दीश्वर, जिसकी उत्तर दिश शुभकार।
अंजनगिरि है भव्य चतुर्दिश, सजल वापिकाएँ मनहार।

जिनमें दधिमुख शोभा पावें, जिनके बाह्य कोणों में जान।
रतिकर गिरियों में जिन मंदिर, का हम करते हैं आह्वान।।
दोहा–जिनगृह उत्तरदिशा के, पूज रहे हम आज।
पूजा करते भाव से, पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिग्जिनालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनं)

(सखी छन्द)

यह नीर तपाकर लाए, त्रय रोग नशाने आए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्व. स्वाहा।

चंदन से गंध बनाए, भव ताप नाश हो जाए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय यह धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, क्षय काम रोग हो जाए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य सरस यह लाए, हम क्षुधानाश को आए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

यह दीप जलाकर लाए, मम् मोहनाश हो जाए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्व. स्वाहा।

हम धूप जलाने लाए, मम कर्मनाश हो जाए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ा हर्षाएँ, हम पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम जिन पद पूज रचाएँ, त्रय योग से महिमा गाएँ।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्यावली

अज्जनगिरि

दोहा–उत्तर के जिनगृह विशद, पूज रहे हम आज।
भाते हैं यह भावना, पाएँ शिव का ताज।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिग्जिनालय जिनमन्दिरेभ्य: पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

दोहा

नंदीश्वर उत्तर दिशा, अञ्जन गिर शुभकार।
जिनगृह जिसपै पूजते, भाव से बारम्बार।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधिमुख

अञ्जन गिरि के पुर्व है, रम्या वापी महान।
दधिमुख गिरि के शीश पै, पूज रहे भगवान।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी दधिमुख पर्वतसिद्धकूट जिनालयजिबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अञ्जन गिरि दक्षिण दिशा, रमणीया है नाम।
वापी में दधिमुख उपरि, जिन पद विशद प्रणाम।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट

जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अञ्जन गिरि पश्चिम दिशा, वापी सुप्रभ जान।

दधिमुख पै जिनगृह जिन, का करते गुणगान।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वतोभद्रा वापि है, उत्तर दिश की ओर।

दधिमुख के जिनधाम जिन, पूजें भाव विभोर।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट रतिकर

रम्या वापी का विशद, कोंण रहा ईशान।

रतिकर गिरि के शीश पै, पूज रहे भगवान।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीईशानयकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्या वापी की दिशा, आग्नेय शुभकार।

रतिकर के जिनगेह जिन, पूज रहे मनहार।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीआग्नेयकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया आग्नेय में, रतिकर रहा महान।

जिस पर जिनगृह हैं रहे, जो हैं पूज्य प्रधान।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रमणीयवापीआग्नेयकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया वायव्य में, रतिकर पै जिनधाम।

जिनबिम्बों के पद युगल, मेरा विशद प्रणाम।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापीनैऋत्यकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट

जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी सुप्रभा के रहा, नैऋत्य कोंण विशेष।

रतिकर पै जिनधाम जिन, पूज रहे अवशेष।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीनैऋत्यकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी सुप्रभा कोंण में, दिशा रही वायव्य।

रतिकर पै जिनधाम जिन, पूज रहे हैं भव्य।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापीवायव्यकोंणे रतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वतोभद्रा वापि का, कोंण रहा वायव्य।

रतिकर पै जिन धाम जिन, पूज रहे हम भव्य।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीवायव्यकोंणे रतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वतोभद्रा वापि की, दिशा कही ईशान।

रतिकर पै जिनधाम जिन, का करते गुणगान।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापीईशानकोंणे रतिकर पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिश में शोभते, तेरह श्री जिनधाम।

पूज रहे हम भाव से, जिन पद विशद प्रणाम।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदश जिनालय जिनबिम्बेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, हैं जिनगेह महान।
जिन प्रतिमाओं का यहाँ, करते हम गुणगान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

रत्नमयी है दीप मनोहर, जिनगृह ही शाश्वत गाए।
हैं द्वीप के उत्तर दिशि पावन, अंजनगिरि अंजन सम पाए।।
हैं चार वापियाँ चारों दिश, दधिमुख जिनमें शुभकारी हैं।
उनके भी बाह्य कोंण रतिकर, दो-दो रति सम मनहारी हैं।।१।।
तेरह जिनगृह उत्तर दिश में, जिनकी महिमा का पार नहीं।
जिनबिम्ब अकृत्रिम रत्नमयी, ना दिखते ऐसे अन्य कहीं।।
मंदिर के तीन कोट बेढ़े, चउ दिश में गोपुर द्वार कहे।
प्रतिबीथी मानस्तभ श्रेष्ठ, प्रति वीथी नव स्तूप रहे।।२।।
मणि कोट प्रथम के अन्तराल, वन भूमि लताएँ शुभकारी।
परकोट द्वितीय के मध्य श्रेष्ठ, ध्वज फहरायें मंगलकारी।।
परकोट तृतिय के बीच चैत्य, भू अतिशायी शोभा पाए।।
सिद्धार्थ वृक्ष अरु चैत्य वृक्ष, जिनबिम्ब सहित शुभ बतलाए।
प्रति मंदिर में हैं गर्भ सुगृह, जो एक सौ आठ-आठ गाए।।३।।
सिंहासन पर जिनबिम्ब विशद, अतिशयकारी शोभा पाए।
हैं बिम्ब पाँच सौ धनुष तुंग, पद्मासन वीतराग धारी।।
शुभ चँवर ढौरते यक्ष युगल, आजू बाजू अतिशयकारी।
शुभ श्री देवी श्रुत देवी की, प्रतिमाएँ जिनके पास रहीं।।४।।
हैं सनत कुमार सर्वाण्ह यक्ष, की मूर्ति जिसके पास कहीं।
प्रत्यक्ष दर्शकर सकें विशद, अतएव यहाँ करते अर्चन।
श्रद्धान रहे दृढ़ जिनवर में, हम करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशतजिनालय जिनबिम्बेभ्यो: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, महिमा अपरम्पार।
पूज रहे हम भाव से, जिनगृह बारम्बार।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अष्टमदीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः।

दोहा-नन्दीश्वर में पूर्व दिश, तेरह हैं जिन धाम।
पुष्पाञ्जलि के साथ हम, जिन पद करें प्रणाम।।

मण्डलस्योपरि...पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अष्टम द्वीप रहा नंदीश्वर, जिसके चारों दिश शुभकार।
तेरह तेरह रहे जिनालय, रत्नमयी शुभ अपरम्पार।।
जिन प्रतिमाएँ जिनमें पावन, अकृत्रिम हे महति महान।।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्संबंधद्वापशत् जिनालयेः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर के चारों दिश में, पच्छपन सौ सोलह शुभकार।
शाश्वत जिन प्रतिमाएँ, पावन पूज रहे हम बारम्बार।।
तेरह तेरह रहे जिनालय, रत्नमयी शुभ अपरम्पार।
जिन प्रतिमाएँ जिनमें पावन, अकृत्रिम हैं महति महान।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालय मथ्यविराजमानपंचसहस्रषट्शतषोडस जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा—नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, जिनगृह रहे विशेष।
पूज रहे हम चतुर्दिक, जिनगृह पूज्य जिनेश।।

(ज्ञानोदय छन्द)

नंदीश्वर की चार दिशा में, कहे चार वन अति अभिराम।
पूरब दक्षिण पश्चिम उत्तर, तेरह तेरह श्री जिन धाम।।
बावन जिनगृह चारों दिश के, जिनमें सोहें जिन भगवान।
एक सौ आठ आठ जिन बिम्बों, का हम करते हैं गुणगान।।१।।
रहे चार वन जिसमें पावन, जिनकी महिमा अपरम्पार।

चम्पक आम्र अशोक सप्तछन्द, शोभा पाते हैं मनहार।।
मध्य में अञ्जन गिरि है पवन, अञ्जन सम जो रहा प्रधान।
सजल वापिका चारों दिश में, चार चार हैं महति महान।।२।।
जिनके मध्य में दधिमुख पावन, शोभा पाते हैं मनहार।
स्वर्ग लोक के देव चतुर्दिग्, अर्चा करते अपरम्पार।।
वापी से जल लाके सुरगण, न्हवन कराते अतिशय वान।
लाल रंग में शोभा पाते, अतिशय कारी रती समान।।३।।
अञ्जन गिरि है चार चार दिश, सोलह दधिमुख रहे महान।
बत्तिस रतिकर शोभा पाते, सभी ढोल की पोल समान।।
गिरियों में शोभा पाते हैं, अकृत्रिम श्री जिनके धाम।
जिनके शाश्वत जिनबिम्बों पद, मेरा बारम्बार प्रणाम।।४।।

दोहा– नन्दीश्वर में जो रहे जिनगृह जिन भगवान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिंबेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

श्रद्धा भक्ती भाव प्राप्त कर, पूजा करते अपरम्पार।।
रोग शोक भव क्लेश नाशकर, हो जाते हैं भव से पार।।
तीन लोक पूजा विधान यह, पावन है सुख का आधार।।
'विशद' ज्ञान हो प्राप्त हमें हम, वन्दन करते बारम्बार।।

।।इत्याशीर्वाद:।।

●

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशतजिनालय जिनबिम्बेभ्यो: समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा–नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, महिमा अपरम्पार।
पूज रहे हम भाव से, जिनगृह बारम्बार।।

●

प्रशस्ति

(चौपाई)

मध्य लोक में भारत देश, जिसमें गाया मध्य प्रदेश।
जिला छतरपुर रहा महान्, ग्रामकुपी जिसमें स्थान।।
सरिता बहे वराना पास, करें गाँव में सभी निवास।
वहाँ सेठ के जानो हाल, जिनका नाम भरोसे लाल।।
पुत्र हुए दो उनके श्रेष्ठ, रामचन्द्र कहलाए ज्येष्ठ।
छोटे पुत्र थे नाथूराम, सभी जानते जिनका नाम।।
जिनके पुत्र का नाम रमेश, ज्ञानी ध्यानी हुए विशेष।
विमल सिन्धु के शिष्य विराग, धर्म से जिनको था अनुराग।।
जिनका पाकर के उपदेश, दीक्षा धारे भाई रमेश।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि धाम, विशद सिन्धु पाए शुभ नाम।।
जगह-जगह मुनि किए विहार, किया आपने धर्म प्रचार।
जयपुर में जब रहा प्रवास, भरत सिन्धु के पहुँचे पास।।
जिनने दिया सुपद आचार्य, लेखन का फिर कीन्हें कार्य।
विशद सिन्धु कई लिखे विधान, जिनकी रही अलग पहिचान।।
नन्दीश्वर में हैं जिन ईश, सुर-नर पूजें जिन्हें ऋृशीष।
उनकी पूजा हेतु विधान, लिखें जगा यह भाव महान्।।
दिल्ली शहर में यमुना पार, कई जगहों पर किया विहान।
नवीन शाहदरा रहा प्रवास, गौतमपुरी है जिसके पास।।
पार्श्वनाथ जिन के पद आन, पूर्ण हुआ यह श्री विधान।
पच्चिस सौ उन्तालिस जान, कहलाया यह वीर निर्वाण।।
तीज कृष्ण वैसाख महान्, रविवार दिन रहा प्रधान।।
अक्षर पद मात्रा की भूल, ज्ञानी जन बाचें अनुकूल।।
दोहा—लघु धी से जो भी लिखा, जानो यही प्रमाण।
जिनवाणी के कथन पर, किया विशद गुणगान।।

●

अष्टान्हिका (नन्दीश्वर पर्व) चालीसा

दोहा–पर्व अठाई में सदा, देव करें प्रस्थान।
नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, करें प्रभू गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, जिनका हम शुभकार।
जिनबिम्बों के चरण में, वन्दन बारम्बार।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, अन्तहीन आकाश कहाया।।१।।
मध्यलोक जिसमें शुभकारी, जिसकी है कुछ महिमा न्यारी।।२।।
जिसके मध्य सुमेरू गाया, जम्बूद्वीप प्रथम कहलाया।।३।।
द्वीप को सागर घेरे जानो, सागर को फिर दीप बखानो।।४।।
अष्टम है नन्दीश्वर भाई, जिसकी फैली जग प्रभुताई।।५।।
एक सौ त्रेसठ कोटि प्रमाणा, लाख चुरासी योजन माना।।६।।
पर्व अढ़ाई जब भी आवें, देव वहाँ पूजन को जावें।।७।।
जिनबिम्बों का न्हवन करावें, गंधोदक निज माथ लगावें।।८।।
चूड़ी सदृश गोला जानो, चारों दिश में जिनगृह मानो।।९।।
इक-इक दिश में तेरह गाये, बावन जिनगृह सर्व बताये।।१०।।
चारों दिश की रचना भाई, शास्त्रों में ऐसी बतलाई।।११।।
मध्य में अञ्जन गिरि शुभकारी, अञ्जन जैसी सोहे कारी।।१२।।
योजन सरस चुरासी भाई, अञ्जन गिरि की है ऊँचाई।।१३।।
रही वापिका घेरे भाई, निर्मल जल से युक्त बताई।।१४।।
चारों दिश में दधिमुख सोहे, दधि समान मन को जो मोहे।।१५।।
दश हजार योजन ऊँचाई, दधिमुख गिरियों की बतलाई।।१६।।
जिसके बाह्य कोण में भाई, रतिकर गिरियाँ हैं अतिशायी।।१७।।
लाल रंग जिनका मनहारी, योजन एक उच्च शुभकारी।।१८।।
ढोल की पोल समान बताए, सब प्रकार के पर्वत गाए।।१९।।
बावड़ियाँ चउ दिश में जानो, एक लाख योजन की मानो।।२०।।
फूल खिले जिनमें मनहारी, रत्नमयी हैं शोभा भारी।।२१।।

अञ्जन गिरि शुभ चार बताए, दधिमुख सोलह पावन गाए।।२२।।
रतिकर बत्तिस हैं मनहारी, जिन पे जिनगृह मंगलकारी।।२३।।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, जिनगृह गाए श्रेष्ठ निराले।।२४।।
ध्वजा कंगूरे कलशा भाई, घंटा तोरण युत अतिशायी।।२५।।
एक सौ आठ गर्भ गृह जानो, प्रति जिनगृह में सोहें मानो।।२६।।
सिंहासन पर जिनवर सोहैं, भवि जीवों के मन को मोहें।।२७।।
प्रति जिनगृह में जिन प्रतिमाएँ, एक सौ आठ-आठ जिन गाएँ।।२८।।
नयन श्याम अरु श्वेत बताए, नख मुख लाल रंग के गाए।।२९।।
भौंह केश काले बतलाए, स्वर्ण मयी जिनबिम्ब बताए।।३०।।
बत्तिस युगल यक्ष शुभकारी, चँवर ढुराते मंगलकारी।।३१।।
श्रीदेवी श्रुतदेवी जानो, पास मूर्तियाँ जिनकी मानो।।३२।।
सर्वाह्ण यक्ष पास में गाए, सनतकुमार भी शोभा पाए।।३३।।
मंगल द्रव्य अष्ट है जानो, पास में श्री जिन के हों मानो।।३४।।
धूप घड़े सोहें शुभकारी, मणिमालाएँ मंगलकारी।।३५।।
मुखप्रेक्षा मण्डप भी सोहें, नर्तन क्रीड़ा गृह मन मोहें।।३६।।
चित्र भवन वन्दन गृह गाये, न्हवन और गुण गृह बतलाए।।३७।।
हम परोक्ष वन्दन को आए, दर्शन पाएँ भाव बनाए।।३८।।
यहाँ बैठ हम अर्चा करते, नाथ चरण में माथा धरते।।३९।।
धन्य सुअवसर हम ये पाएँ, कर्मनाश कर शिवपद पाएँ।।४०।।

दोहा–चालीसा पढ़ के 'विशद', हो अतिशय आनन्द।
जीवन सुखमय शांत हो, कर्माश्रव हो मन्द।।
पर्व अठाई में पढ़ें, सुने सुनाएँ जोय।
रोग शोक क्लेशादि भी, दूर शीघ्र ही होय।।

ज्ञानोदय छन्द

स्वच्छ स्फटिक मणि सा उज्ज्वल, मम चेतन का रूप रहा।
कर्म मलों से लिप्त हुआ जो, भव सिन्धू में डूब रहा।।
प्रभू आपकी पूजा कर्मों, की सारा कलिता धूल।
विशद आत्मा निर्मल होवे, कर्म कालिमा पूर्ण गले।।१।।

चन्दन शीतल होकर के भी, मन का पूर्ण ना ताप हरे।
मृग तृष्णा में जीवन बीते, जो तनमन को दुखित करे।।
पूजा करके प्रभू आपकी, भव का मम संताप गले।
विशद ज्ञान में प्रकट करे जो, मोक्ष महल तक साथ चले।।२।।
अक्षय अक्षत पाएँ भव-भव, अक्षय पद न प्राप्त किए।
राग द्वेष कर मोह बढ़ाकर, दुख के कड़वे घूट पिए।।
सुरभित गंध मिले पुष्पों से, नहीं तृप्त होवे नाशा।
विषय भोग में रमण करे मन, पूर्ण ना हो मन की आशा।।३।।
गड़ना ना नैवेद्यों की हो, स्वादवान पाए सारे।
फूटे घड़े समान जो फिर फिर, भर-भर करके हम हारे।
दीपप्रकाशित करता जग को, उसके तले तिमिर होवे।
मोह निशा में जीव जगत में, निज की शक्ती को खोवे।।
सुरभित धूप अग्नि में पढ़ते, श्रेष्ठ सुगन्धित धूम उड़े।
कर्मों की सेना से हरदम, यह अज्ञानी जीव घिरे।।४।।
रंग विरंगे महामनोहर, खट्टे मीठे फल पाए।
सुख माना हमने उनमें ही, मोक्षमहाफल न पाए।।
अर्घ्य चढ़ाकर अष्ट द्रव्य का, चढ़ा चढ़ा कर हम हारे।
पद अनर्घ्य पाने हे स्वामी!, आये हम तुमरे द्वारे।।
दोहा—नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, वावन जिनगृह श्रेष्ठ।
विशद भाव से पूजते, श्री जिनबिम्ब यथेष्ठ।।

●

नन्दीश्वर की आरती

(तर्ज : शांति अपरम्पार है...)
नन्दीश्वर अविराम है, बावन शुभ जिन धाम हैं,
जिन चरणों की आरति करके, करते विशद प्रणाम हैं।
प्रथम आरती अंजनगिरि की, चतुर्दिशा में सोहें जी-२

जिन चैत्यालय चैत्य हैं उन पर, सबके मन को मोहें जी- २।।नन्दीश्वर...
अंजनगिरि के चतुर्दिशा में, बावड़िया शुभ जानो जी- २
स्वच्छ नीर से भरी हुई हैं, अतिशय कारी मनो जी। नन्दीश्वर...
मध्य बावड़ी के हैं दधिमुख, अतिशय मंगलकारी जी- २
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी- २।। नन्दीश्वर...
बावड़ियों के बाह्य कोंण पर, रतिकर विस्मयकारी जी- २
उनके ऊपर जिन चैत्यालय, प्रतिमाएँ मनहारी जी- २।। नन्दीश्वर...
शाश्वत जिनगृह जिनबिम्बों की, आरती करने आये हैं- २
'विशद' अर्चना के परोक्ष ही, हमने भाव बनाएँ हैं।। नन्दीश्वर...

नन्दीश्वर द्वीप स्तुति

(तर्ज : श्री सिद्धचक्र का पाठ करो...)

श्री नन्दीश्वर का पाठ, करो दिन आठ, विशद मनहारी।
जो रहा कर्म क्षयकारी।।टेक।।

जब पर्व अठाई आते हैं, सुर नन्दीश्वर में जाते हैं।
सब प्रभु की भक्ति करते अतिशयकारी,-जो रही कर्म क्षयकारी।।१।।
हैं अकृत्रिम जिन प्रतिमाएँ, जो वीतरागता दर्शाएँ।
जिनकी मुद्रा है पावन शुभ अविकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।२।।
सुर प्रभु का न्हवन कराते हैं, जो जय-जयकार लगाते हैं।
जो करते हैं जिन पूजा मंगलकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।३।।
नर-मुनि ऋद्धीधर ना जावें, ना विद्याधर शक्ति पावें।
वे कृत्रिम रचना करते हैं शुभकारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।४।।
नन्दीश्वर पूजा यह भाई, होती है पावन फलदायी।
जिन अर्चा करते हैं सुर नर अनगारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।५।।
हम जिन पूजा करने आये, यह द्रव्य बनाकर के लाए।
प्रभु न्हवन हेतु यह भरकर लाए झारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।६।।
हे नाथ! आपको हम ध्यायें, शिवपथ के राही बन जाएँ।
हो 'विशद' भावना पूरी आज हमारी, जो रही कर्म क्षयकारी।।७।।

●

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज की आरती

(तर्जः–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।

गुरुवर के चरणों में नमन् ...4 मुनिवर के...

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।

गुरुवर के चरणों में नमन् ...4 मुनिवर के...

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के...2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।

गुरुवर के चरणों में नमन् ...4 मुनिवर के...

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।

गुरुवर के चरणों में नमन् ...4 मुनिवर के...

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी...2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन् ...4 मुनिवर के...जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

●